Website: www.winews.in | Email: winews.in@gmail.com | दिल्ली, नोएडा, हापुड़, फरीदाबाद, मोदीनगर, मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, रूड़की, हरिद्वार, देहरादून, मुरादाबाद, बुलंदशहर, अलीगढ़, मथुरा, आगरा,राजस्थान, पंजाब, बहराइच,रामपुर, लखनऊ, काशीपुर, देवबंद में प्रसारित

दैनिक

# वेलकम इंडिया

गाजियाबाद से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

RNI NO. UPHIN/2018/76874

नये भारत की नई सोच

वर्ष: 07 अंक: 218 | मंगलवार, 18 अगस्त-2026 (गाजियाबाद) | पेज-8 | मूल्य-एक रुपया

# लखीसराय के अशोकधाम मंदिर में भगदड़, सात श्रद्धालुओं की मौत-कई घायल

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**बिहार।** बिहार के लखीसराय स्थित प्रसिद्ध अशोकधाम मंदिर में सोमवार सुबह भगदड़ मच गई। इस घटना में सात श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोगों के घायल होने की सूचना है। हादसे के बाद मंदिर परिसर में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंचीं और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया।

## मंदिर परिसर में मची अफरा-तफरी, घायलों को अस्पताल भेजा गया

बताया जा रहा है कि सोमवार सुबह अशोकधाम मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ के बीच भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। देखते ही देखते परिसर में अफरा-तफरी मच गई। हादसे के बाद पुलिस और प्रशासन की टीमों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला। घायल श्रद्धालुओं को तत्काल इलाज के लिए नजदीकी अस्पतालों में भेजा गया है।

## एसडीपीओ ने छह मौतों की पुष्टि की

एसडीपीओ शिवम कुमार ने बताया कि घटना में सात लोगों की मौत हुई है, जबकि कई अन्य लोग घायल हुए हैं। प्रशासन की टीमें मौके पर मौजूद हैं और पूरे घटनाक्रम की जानकारी जुटाई जा रही है। हादसा किन परिस्थितियों में हुआ और भगदड़ जैसी स्थिति कैसे बनी, इसकी जांच की जा रही है। प्रशासन की ओर से घटना के कारणों का पता लगाने के साथ ही राहत एवं बचाव कार्य जारी है। लखीसराय के डीएम शैलेंद्र कुमार ने अशोकधाम मंदिर में भगदड़ जैसी घटना को लेकर बताया कि प्रशासनिक टीम सुबह करीब 4:30 बजे से ही मौके पर मौजूद थी। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की अप्रत्याशित भीड़ के बीच शाम करीब 6:30 से 6:45 बजे के बीच दो ट्रेनों के ठहराव के कारण मंदिर परिसर में भीड़ और बढ़ गई। डीएम के अनुसार, प्रशासन की ओर से पहले से ही पुलिस बल, स्वास्थ्यकर्मियों, एंबुलेंस, टोटो एंबुलेंस और बाइक एंबुलेंस समेत जरूरी व्यवस्थाएं की गई थीं। इसी दौरान करीब 6:40 से 6:45 बजे के बीच भीड़ का दबाव बढ़ने से एक तरफ की बैरिकेडिंग टूट गई। इसके बाद कुछ श्रद्धालु एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़े, जिससे भगदड़ जैसी स्थिति बन गई और हादसा हो गया। डीएम ने बताया कि घटना में अब तक सात लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। प्रशासन की टीम मौके पर राहत एवं बचाव कार्य में जुटी है और पूरे घटनाक्रम की जांच की जा रही है।

## मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने जताया दुख

बिहार के लखीसराय स्थित प्रसिद्ध अशोकधाम मंदिर में हुए दर्दनाक हादसे में श्रद्धालुओं की मौत पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना जताते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और पीड़ित परिवारों को इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करने की कामना की। मुख्यमंत्री ने हादसे में घायल लोगों के समुचित और त्वरित इलाज के लिए प्रशासन को आवश्यक निर्देश दिए हैं। उन्होंने अधिकारियों से घायलों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने और उपचार में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं बरतने को कहा है।

## मोदी ने हादसे में मारे गये लोगों के प्रति जतायी संवेदना

नयी दिल्ली, 17 अगस्त (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के लखीसराय में भगदड़ के कारण हुई जनहानि पर गहरा शोक व्यक्त किया। श्री मोदी ने कहा कि दुख की इस घड़ी में उनकी संवेदनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों की सक्रिय रूप से सहायता कर रहा है।

गौरतलब है कि लखीसराय में अशोक धाम मंदिर के समीप सावन के तीसरे सोमवार के अवसर पर आज भगदड़ मच जाने से सात महिला श्रद्धालुओं की मौत हो गयी तथा 18 से अधिक लोग घायल हो गये हैं।

## डीएम शैलेंद्र कुमार ने बताया कैसे हुआ हादसा

लखीसराय के डीएम शैलेंद्र कुमार ने अशोकधाम मंदिर में हुई भगदड़ जैसी घटना को लेकर बताया कि श्रद्धालुओं की कतार अशोकधाम हॉल्ट तक पहुंच गई थी। इसी दौरान हॉल्ट पर दो ट्रेनें भी रुकी हुई थीं। अचानक एक बिजली का पोल गिर गया। यह पोल पुरुष श्रद्धालुओं की कतार के दाहिनी ओर स्थित था। डीएम के मुताबिक, पोल गिरने के बाद मौके पर यह अफवाह फैल गई कि लोगों के ऊपर बिजली का तार गिर गया है। हालांकि, वह बिजली का तार नहीं बल्कि केबल का तार था। इस अफवाह के कारण महिलाओं की कतार में अचानक दबाव बढ़ गया और महिलाएं एक-दूसरे के ऊपर गिरने लगीं। इसी दौरान भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। शैलेंद्र कुमार ने बताया कि पुलिस और प्रशासन की टीम सुबह करीब 3 बजे से ही मौके पर निगरानी और व्यवस्था संभाल रही थी, लेकिन यह घटना अचानक हुई और महज दो मिनट के भीतर स्थिति बिगड़ गई। उन्होंने बताया कि फिलहाल अधिकारी सदर अस्पताल में मौजूद हैं और पूरे घटनाक्रम पर नजर रखी जा रही है।

# सुप्रीम को से राहुल गांधी को बड़ी राहत

## आय से अधिक संपत्ति मामले में हाई कोर्ट की सुनवाई रोकी

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय से कहा कि वह कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति के मामले में कार्यवाही आगे न बढ़ाए। सुप्रीम कोर्ट ने CBI और एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट को यह भी निर्देश दिया कि वे लोकसभा में विपक्ष के नेता गांधी के खिलाफ मामले के संबंध में हाई कोर्ट के सामने कोई रिपोर्ट पेश न करें।

चीफ जस्टिस सूर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची और वी. मोहना की बेंच ने गांधी की ओर से पेश सीनियर वकील कपिल सिबल की दलीलों पर गौर किया और कर्नाटक के रहने वाले एस. विग्नेश शिशिर (जिन्होंने हाई कोर्ट का रुख किया था) के साथ-साथ CBI और ED को भी नोटिस जारी किए। यह बेंच इस मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली गांधी की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह इस मामले की जांच करना चाहता है क्योंकि एक अदालत ने निर्देश जारी किए थे, जिससे जांच एजेंसियों के काम करने के तरीके पर सवाल उठे थे। सुनवाई के दौरान, बेंच ने प्राकृतिक न्याय के महत्व पर भी जोर दिया और कहा कि ऐसी कार्यवाही के दौरान अदालतों से निष्पक्षता के सिद्धांतों का पालन करने की उम्मीद की जाती है। जब CBI ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस मामले की जांच करने पर आपत्ति जताई, तो बेंच ने एजेंसी के रुख पर सवाल उठाए। कोर्ट ने कहा कि अगर CBI ने खुद से यह प्रक्रिया शुरू नहीं की थी और हाई कोर्ट के निदेशों के कारण ऐसा किया था, तो सुप्रीम कोर्ट को उन हालात की जांच करने का अधिकार है जिनमें वे निर्देश जारी किए गए थे। बेंच ने कहा कि अगर आपने इसे खुद (suo motu) शुरू नहीं किया है, तो हमें इसकी जांच करने दें।' साथ ही, बेंच ने कहा कि अगर किसी एजेंसी को कोर्ट के आदेश पर कार्रवाई करने के लिए मजबूर किया गया था, तो सुप्रीम कोर्ट को उस चुनौती पर सुनवाई करनी चाहिए। यह विवाद कर्नाटक के BJP कार्यकर्ता एस. विग्नेश शिशिर की याचिका पर इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच में चल रही कार्यवाही से जुड़ा है। याचिकाकर्ता ने उन आरोपों की जांच की मांग की थी जिनमें कहा गया था कि गांधी के पास उनकी ज्ञात आय के स्रोतों से कहीं ज्यादा संपत्ति है।

# 'मुझे व्यवस्था से मुक्त करें!' शहजाद पूनावाला ने बीजेपी को दोबारा भेजा इस्तीफा

## 'सिर्फ पद छोड़ रहा हूँ, मोदी का साथ नहीं': शहजाद पूनावाला

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने एक बार फिर पार्टी नेतृत्व को अपना इस्तीफा भेजकर संगठनात्मक ज़िम्मेदारियों से मुक्त करने का आग्रह किया है। पार्टी द्वारा शुरूआती दौर में उनका इस्तीफा खारिज किए जाने के बाद, पूनावाला ने BJP अध्यक्ष नितिन नवीन को एक नया पत्र लिखकर पद और सक्रिय सदस्यता छोड़ने के अपने फैसले को दोहराया है। नेतृत्व से आग्रह किया है कि वे इसे स्वीकार करें और उन्हें संगठनात्मक ज़िम्मेदारियों से मुक्त करें।

BJP अध्यक्ष नितिन नवीन को लिखे और पर साझा किए गए पत्र में, पूनावाला ने कहा कि वह आभारी हैं कि BJP ने शुरू में उनका इस्तीफा स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और उनसे अपने फैसले पर पुनर्विचार करने को कहा था। हालाँकि, 'लंबे और गहन चिंतन' के बाद, उन्होंने कहा कि वह पार्टी की भूमिका और सक्रिय सदस्यता से हटने के अपने फैसले पर अडिग रहने के अंतिम निर्णय पर पहुँचे हैं। उन्होंने कहा, 'पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने - जो कुछ ऐसे लोगों की वजह से हुईं जिनके बारे में मैंने आपको विस्तार से बताया है - मुझे अपने पहले के फैसले को दोहराने और उस पर कायम रहने के लिए मजबूर किया है।' उन्होंने उन लोगों का नाम नहीं लिया। 2021 के अंत में इखढ में शामिल हुए पूनावाला पार्टी के प्रमुख चेहरों और संगठन के भीतर सबसे प्रमुख मुस्लिम आवाजों में से एक बनकर उभरे थे। अपने फैसले के बारे में बताते हुए, पूनावाला ने दोहराया कि वह 'अत्यंत जरूरी वित्तीय और व्यक्तिगत परिस्थितियों' के कारण निजी क्षेत्र में जाएँगे। साथ ही, उन्होंने कहा कि वह प्रधानमंत्री मोदी और BJP के विजन और काम का समर्थन करना जारी रखेंगे - 'जहाँ भी संभव हो और जिस भी रूप में संभव हो'। पूनावाला ने कहा, 'मैं केवल 'व्यवस्था' छोड़ रहा हूँ, 'व्यक्ति' या 'विचार' नहीं।' इससे संकेत मिलता है कि पार्टी संगठन छोड़ने का उनका फैसला मोदी के प्रति उनकी राजनीतिक निष्ठा या BJP के वैचारिक ढांचे से अलग होने जैसा नहीं है।

# जंगल में मुठभेड़ या कुछ और?: CM विजय के सवालों से घिरे मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** कर्नाटक के चामराजनगर जिले में वन विभाग के अधिकारियों के साथ कथित मुठभेड़ में तीन लोगों की मौत का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय ने घटना पर सवाल उठाते हुए कहा है कि मारे गए तीनों लोग तमिल थे। उन्होंने कर्नाटक वन विभाग की ओर से दी गई सफाई को 'अस्वीकार्य' बताते हुए मामले की गहन जांच की मांग की है। शनिवार तड़के संदिग्ध शिकारी कथित तौर पर वन्यजीवों का शिकार करने के इरादे से जंगल में दाखिल हुए थे। इसकी सूचना मिलने के बाद वन विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। सूत्रों के मुताबिक, इस दौरान संदिग्ध शिकारियों ने वन कर्मियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। जवाब में वन कर्मियों ने भी गोलियां चलाईं, जिसके बाद दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में शिकारी होने के संदेह में तीन लोगों की गोली लगने से मौत हो गई। मृतकों की पहचान एंटनी स्वामी, जॉन रोज पीटर और कुमार के रूप में हुई है। घटना के बाद इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

# पश्चिम बंगाल के तारापीठ में दर्दनाक हादसा, होटल में भीषण आग लगने से 7 लोगों की जलकर मौत

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** पश्चिम बंगाल के बीरभूम ज़िले में स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल तारापीठ में सोमवार तड़के एक भीषण हादसा हो गया। यहाँ एक चार मंज़िला निजी होटल में आग लगने से कम से कम सात लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोग गंभीर रूप से झुलस गए। अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि पश्चिम बंगाल के बीरभूम ज़िले के तारापीठ मंदिर शहर में एक प्राइवेट होटल में भीषण आग लगने से कम से कम सात लोगों की जलकर मौत हो गई।

यह घटना सुबह करीब 4 बजे हुई, जब चार मंज़िला होटल के ग्राउंड फ़्लोर पर आग लग गई। इसके बाद आग बुझाने वाली दो गाड़ियां मौके पर भेजी गईं ताकि स्थिति को काबू में किया जा सके। मौके की तस्वीरों और वीडियो में फायरफाइटिंग अधिकारी और पुलिस आग बुझाने की कोशिश करते हुए दिखाई दिए। स्थानीय लोग भी अधिकारियों की मदद करते दिखे। हालांकि स्थिति को काबू में कर लिया गया है, लेकिन स्थानीय लोगों को डर है कि मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। बताया जा रहा है कि आग होटल के एक अउ यूनिट में लगी और तेजी से फैल गई। शुरूआती जांच से पता चलता है कि होटल में आग से सुरक्षा के बुनियादी इंतजाम नहीं थे और अहम समय पर फायर अलार्म भी काम नहीं कर पाया। हालांकि, बाद में अधिकारियों द्वारा इसकी पूरी जांच किए जाने की संभावना है। इस घटना में कई लोग घायल भी हुए, जिन्हें रामपुरहाट सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल ले जाया गया। अधिकारियों के मुताबिक, यह घटना ऐसे समय में हुई जब प्रसिद्ध काली मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए तारापीठ में लोगों की भारी भीड़ जुटी हुई थी। कोलकाता की रहने वाली एक महिला गेस्ट ने बताया कि पूरा होटल धुएं से भर गया था और इसकी वजह से कई लोग बाहर नहीं निकल पाए; साथ ही उन्होंने कहा कि कई लोगों को सांस लेने में भी दिक्कत हुई।

# 'देखिए आपके एनटीए ने क्या किया', यूजीसी-नेट में गड़बड़ी पर राहुल गांधी का पीएममोदी पर निशाना

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने तीन विषयों की यूजीसी-नेट (यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन, नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट) परीक्षा में प्रश्न पत्रों की गलतियों के चलते पुनर्परीक्षा कराने के फैसले को लेकर पीएम मोदी और राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी पर तीखा हमला बोला है। एनटीए द्वारा अंग्रेज़ी, कॉमर्स और सोशियोलॉजीकी परीक्षाएं कैंसिल कर सितंबर में दोबारा कराने की घोषणा के बाद, राहुल गांधी ने देश की शिक्षा व्यवस्था को शोषण मशीन करार दिया। राहुल गांधी ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा व्यवस्था को सुधारने की दिशा में पहला कदम है, आखिरी नहीं। उन्होंने कहा, कि एनटीए के नेतृत्व को भी जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, "मोदी जी, देखिए आपकी NTA ने फिर क्या कर दिया है। 22 से 30 जून के बीच सोशियोलॉजी, इंग्लिश और कॉमर्स विषय की यूजीसी-नेट परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। लगभग दो महीने बीत जाने के बाद, NTA ने इन तीनों परीक्षाओं को रद कर दिया क्योंकि उन्होंने गलत प्रश्नपत्र तैयार किए थे और पुराने सवाल दोबारा पूछ लिए थे।"

# आर-पार के मूड में छात्र: सोरेन और राहुल गांधी का पुतला फूंकने के बाद बैकफुट पर आई हेमंत सरकार

**वेलकम इंडिया, नेटवर्क**

**नई दिल्ली।** झारखंड में प्रतियोगी परीक्षाओं में हुई कथित धांधली और गड़बड़ियों को लेकर सड़कों पर उतरे छात्रों का आक्रोश अब चरम पर पहुँच गया है। आंदोलन के 23वें दिन राजधानी रांची के जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम और अल्बर्ट एक्का चौक पर प्रदर्शनकारी छात्रों ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के पुतले फूँककर अपना उग्र विरोध दर्ज कराया। आंदोलन के बढ़ते दबाव और सड़कों पर भड़के इस गुस्से के बाद राज्य सरकार बैकफुट पर आती दिख रही है। विवाद को सुलझाने के लिए प्रशासन ने प्रदर्शनकारी छात्र नेताओं को चौथे दौर की औपचारिक बातचीत के लिए आमंत्रित किया है।

रांची के अलावा, अन्य जिलों में भी पुतले जलाए गए और छात्रों ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व वाली सरकार और कांग्रेस के खिलाफ नारे लगाए। कांग्रेस ने कथित तौर पर वादा किया था कि अगर सरकार स्वतंत्रता दिवस तक उनकी मांगों को पूरा नहीं करती है, तो वह राज्य सरकार से अपना समर्थन वापस ले लेगी। बाद में, राज्य सरकार ने प्रदर्शन के नेताओं को बातचीत के चौथे दौर के लिए आमंत्रित किया। यह जानकारी रांची के एक जिला अधिकारी ने दी, जो छात्रों तक सरकार के प्रस्ताव पहुंचाने का काम कर रहे हैं। राज्य की राजधानी के स्टेडियम में 25 जुलाई से सैकड़ों छात्र जमा हैं। वे झारखंड लोक सेवा आयोग की संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा और झारखंड सामान्य स्नातक स्तरीय संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा (जिसे झारखंड कर्मचारी चयन आयोग-संयुक्त स्नातक स्तरीय या JSSC-CGL परीक्षा के रूप में भी जाना जाता है) सहित अन्य परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं की CBI जांच की मांग कर रहे हैं। JPSC-JSSC सुधार मंच के नेता रवींद्र पासवान ने कहा कि जब छात्रों का आंदोलन शुरू हुआ था, तो लोकसभा में विपक्ष के नेता श्री गांधी ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि अगर श्री सोरेन उनकी मांगों पर कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाते हैं या 15 अगस्त तक संतोषजनक जवाब नहीं देते हैं, तो कांग्रेस JMM के नेतृत्व वाली सरकार से अपना समर्थन वापस ले लेगी। हालांकि, श्री पासवान ने कहा कि 15 अगस्त के बाद भी सरकार ने उनकी मांगों को पूरा करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। प्रदर्शन के नेता ने कहा, 'हमने पहले ही घोषणा कर दी है कि अगर सरकार 18 अगस्त तक हमारी मांगें नहीं मानती है, तो हम 20 अगस्त को मुख्यमंत्री आवास का घेराव करेंगे। हमारे पास कोई और विकल्प नहीं बचा है।' रांची सदर के सब-डिविजनल ऑफिसर कुमार रजत और लॉ एंड ऑर्डर के एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट धनंजय कुमार, दोनों ने शाम को विरोध कर रहे छात्रों से मिलकर सरकार के प्रस्ताव उनके सामने रखे। श्री रजत ने 'द हिंदू' को भेजे एक व्हाट्सएप मैसेज में पुष्टि की कि सरकार ने छात्रों को सोमवार (17 अगस्त, 2026) को दोपहर 2 बजे से 3 बजे के बीच रांची के स्टेट गेस्ट हाउस में बातचीत के लिए बुलाया है। यह सरकार के साथ बातचीत का चौथा दौर होगा।

## संपादक की कलम से

# पुस्तकें बिकती हैं, पाठकीयता नहीं

ललित शर्मा
संपादक

किताब छापी जा सकती है, प्रदर्शित की जा सकती है, उसका विज्ञापन किया जा सकता है, उस पर छूट दी जा सकती है और उसे बेचा जा सकता है। लेकिन पाठकीय संस्कृति केवल विपणन के माध्यम से पैदा नहीं की जा सकती। कोई पुस्तक पाठक की अलमारी तक तो पहुँच सकती है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह उसके मन और विचारों तक भी पहुँचे। किसी पुस्तक की वास्तविक सफलता केवल उसकी बिक्री के आंकड़ों में नहीं, बल्कि इस बात में है कि कितने लोगों ने उसे पढ़ा, उसके विचारों पर चिंतन किया और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। आज का प्रकाशन उद्योग अत्यंत प्रतिस्पर्धी हो गया है। प्रकाशक, लेखक और पुस्तक विक्रेता स्वाभाविक रूप से बिक्री, लोकप्रियता, रैंकिंग और व्यावसायिक सफलता पर ध्यान देते हैं। आकर्षक आवरण, प्रचार अभियान, सोशल मीडिया पोस्ट और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने पुस्तकों को पहले की तुलना में अधिक सुलभ बना दिया है। फिर भी एक विरोधाभासी स्थिति सामने आ रही है—पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ रही है, लेकिन निरंतर और गंभीर पढ़ने की आदत कई चुनौतियों का सामना कर रही है। स्मार्टफोन और छोटे डिजिटल कंटेंट के बढ़ते प्रभाव ने लोगों के सूचना ग्रहण करने के तरीके को बदल दिया है। अनेक युवा वीडियो, सुर्खियों और छोटी-छोटी पोस्ट को तेजी से देखने और आगे बढ़ जाने के अभ्यस्त हो रहे हैं। किसी लंबे अध्याय को पढ़ने के लिए धैर्य, एकाग्रता और मानसिक सहभागिता की आवश्यकता होती है। छोटी डिजिटल क्लिप के विपरीत पुस्तक हमेशा तत्काल मनोरंजन या उत्तेजना प्रदान नहीं करती। वह पाठक से समय और ध्यान मांगती है। यहीं पुस्तक बेचने और पाठक बनाने के बीच का अंतर महत्वपूर्ण हो जाता है। कोई व्यक्ति किसी पुस्तक को सिफारिश, बेस्टसेलर के लेबल या आकर्षक विज्ञापन से प्रभावित होकर खरीद सकता है। लेकिन खरीदना केवल शुरुआत है। वास्तविक परिवर्तन तब होता है जब पाठक पुस्तक खोलता है, उसके विचारों से जुड़ता है, उन पर विचार करता है और अगली पुस्तक पढ़ने की इच्छा विकसित करता है। एक सच्ची पाठकीय संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होती है—जिज्ञासा, पारिवारिक वातावरण, पुस्तकालयों, विद्यालयों और पुस्तकों पर सार्थक बातचीत के माध्यम से। इस प्रक्रिया में विद्यालयों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पढ़ने को केवल परीक्षा की आवश्यकता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर कहानियाँ, जीवनियाँ, विज्ञान की पुस्तकें, इतिहास, यात्रा-वृत्तांत, कविता और उनकी आयु के अनुरूप साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। जब पढ़ना केवल परीक्षा से जुड़ जाता है, तो वह बोझ जैसा लग सकता है। लेकिन जब पढ़ना खोज, आनंद और जिज्ञासा से जुड़ता है, तो यह जीवनभर की आदत बन सकता है। परिवार भी बच्चों के पुस्तक-प्रेम को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस बच्चे के माता-पिता को पढ़ते हुए देखकर वह बड़ा होता है, उसके लिए पुस्तक केवल पढ़ाई का साधन नहीं रहती, बल्कि ज्ञान, कल्पना और मानसिक संगति का स्रोत बन जाती है। परिवार में प्रतिदिन कुछ मिनट साथ बैठकर पढ़ना भी बच्चों के मन में पुस्तकों के प्रति सकारात्मक भावना पैदा कर सकता है। पुस्तकालयों को भी समय के साथ बदलना होगा। आधुनिक पुस्तकालय का काम केवल पुस्तकों को संग्रहित करना नहीं, बल्कि पाठक तैयार करना होना चाहिए। पठन क्लब, लेखक से संवाद, कहानी सुनाने के कार्यक्रम, पुस्तक परिचचाएँ और विद्यार्थियों द्वारा पुस्तक-सिफारिश जैसी गतिविधियाँ पुस्तकालयों को जीवंत सामुदायिक केंद्र बना सकती हैं। डिजिटल संसाधन मुद्रित पुस्तकों के विकल्प के बजाय उनके सहयोगी बन सकते हैं। इसलिए चुनौती केवल अधिक पुस्तकें बेचने की नहीं है।

# अल्पसंख्यकों की असुरक्षा से आतंकवाद तक पाक का यथार्थ

डॉ विजय गर्ग
लेखक

पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी का स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिया गया हालिया बयान केवल एक जहरीली एवं कड़वी राजनीतिक टिप्पणी ही नहीं है, बल्कि पाकिस्तान की उस मानसिकता का आईना है, जिसमें भारत के प्रति कटुता, अविश्वास, नफरत और वैचारिक विरोध आज भी गहरे पैठे हुए हैं। जरदारी ने 'अखंड भारत' की अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि भारतीय इसमें विश्वास करते हैं, लेकिन वे मुसलमान होने के नाते इससे सहमत नहीं हैं। साथ ही उन्होंने पाकिस्तान में हिंदुओं के सुरक्षित और सुखी होने का दावा भी किया। सवाल यह है कि दुनिया किसी राष्ट्राध्यक्ष के दावे पर विश्वास करे या आंकड़ों और जमीन पर दिखाई देने वाली वास्तविकता पर? इतिहास का न्याय भावनाओं से नहीं, तथ्यों से होता है। और पाकिस्तान के संदर्भ में जनसांख्यिकी, अल्पसंख्यकों की स्थिति, धार्मिक स्वतंत्रता और आतंकवाद-ये चारों क्षेत्र ऐसे आईने हैं जिनमें उसकी अपनी तस्वीर साफ दिखाई देती है।

1947 में जब पाकिस्तान वजूद में आया एवं 1951 की जनगणना में पूरे तत्कालीन पाकिस्तान में हिंदुओं की हिस्सेदारी लगभग 14.6 प्रतिशत थी, पाकिस्तान की 2023 की आधिकारिक जनगणना में 'हिंदू जाति' की आबादी 3,867,729 और 'अनुसूचित जाति' की आबादी 1,349,487 दर्ज की गई है। कुल आबादी 240.46 मिलियन है। इन दोनों श्रेणियों को जोड़ें तो हिस्सा लगभग 2.17 प्रतिशत बैठता है। अर्थात आज के पाकिस्तान में हिंदू समुदाय की जनसंख्या हिस्सेदारी अत्यंत सीमित रह गई है। इसके विपरीत भारत की स्थिति को भी तथ्यों के साथ ही देखना चाहिए। भारत की अंतिम प्रकाशित पूर्ण जनगणना 2011 की है। उसमें मुस्लिम आबादी 14.23 प्रतिशत, यानी 17.22 करोड़ दर्ज हुई थी। यही वह बिंदु है जहां भारत और पाकिस्तान के बीच वास्तविक अंतर सामने आता है। भारत ने धर्म के आधार पर नागरिकता की अवधारणा को राज्य की नागरिकता का आधार नहीं बनाया। संविधान ने हर नागरिक को समान नागरिक अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और अपनी आस्था के पालन की स्वतंत्रता दी। भारत में मुसलमानों ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, न्यायपालिका, सेना, शिक्षा, उद्योग, कला, खेल और प्रशासन सहित जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, उसकी शक्ति है। इसके विपरीत पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की स्थिति पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं की रिपोर्टें गंभीर प्रश्न उठाती हैं। 'ूमन राइटस वाच की 2026 की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में ईशनिंदा कानूनों के दुरुपयोग ने धार्मिक अल्पसंख्यकों को हिंसा, मनमानी गिरफ्तारी और सामाजिक दबाव के प्रति अत्यंत संवेदनशील बना दिया है। रिपोर्ट में हिंदुओं, ईसाइयों और अहमदियों सहित अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा और जबरन विवाह-धर्मांतरण जैसी समस्याओं का उल्लेख है। 2023 में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के जरनवाला में ईशनिंदा के आरोपों के बाद चर्चों और ईसाई घरों पर भीड़ के हमले हुए। 'ूमन राइटस वाच ने पाकिस्तान में ईशनिंदा कानूनों के इस्तेमाल से अल्पसंख्यकों की संपत्ति पर कब्जे और उन्हें घर छोड़ने के लिए मजबूर किए जाने के मामलों का भी दस्तावेजीकरण किया है। ऐसे में जरदारी का यह कहना कि पाकिस्तान के हिंदू बहुत खुश हैं, एक झूठा, गुमराह करने वाला एवं भ्रामक राजनीतिक दावा तो हो सकता है, लेकिन उसे व्यापक तथ्यात्मक प्रमाण की कसौटी पर परखा जाना चाहिए। किसी देश में अल्पसंख्यक सुरक्षित हैं या नहीं, इसका प्रमाण केवल राष्ट्राध्यक्ष का बयान नहीं, बल्कि उनके नागरिक अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता, मंदिरों और पूजा स्थलों की सुरक्षा, कानून के सामने समानता तथा भयमुक्त जीवन है। भारत में सरकारों के खिलाफ मुसलमानों एवं अन्य अल्पसंख्यकों के द्वारा आवाज उठाई जा सकती है, न्यायालयों में चुनौती दी जा सकती है। यही लोकतांत्रिक भारत और धार्मिक-सामुदायिक असुरक्षा से जूझते पाकिस्तान के बीच बुनियादी अंतर है। दूसरा बड़ा प्रश्न पाकिस्तान के भारत-विरोधी आतंकवाद का है। पिछले कई दशकों में सीमा पार आतंकवाद भारत की सुरक्षा के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में रहा है। संसद पर हमला, मुंबई हमले, पठानकोट, उरी, पुलवामा और जम्मू-कश्मीर में लगातार हिंसक घटनाएं इस समस्या का हिस्सा रही हैं। 2019 में पुलवामा हमले के बाद भारत ने बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविर पर कार्रवाई की। विदेश मंत्रालय ने उस समय स्पष्ट किया था कि पाकिस्तान की जमीन पर चल रहे आतंकवादी ढांचे के विरुद्ध कार्रवाई की गई क्योंकि पाकिस्तान उन्हें नष्ट करने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहा था।

2025 में पहलगाम के आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की सुरक्षा नीति में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत दिया। 22 अप्रैल 2025 के हमले में 26 लोगों की हत्या के बाद 7 मई को भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत जम्मू-कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। भारत सरकार ने इसे आतंकवादी ढांचे के विरुद्ध लक्षित और नियंत्रित कार्रवाई बताया। यह परिवर्तन केवल सैन्य कार्रवाई तक सीमित नहीं है। भारत ने आतंकवाद के साथ-साथ उसके वित्तीय और नशीले पदार्थों के नेटवर्क पर भी ध्यान केंद्रित किया है। सरकार ने विदेशी तत्वों द्वारा नशीले पदार्थों को सीमा पार भेजकर 'नार्को-टेरर' को वित्त उपलब्ध कराने की बात कही है। यहां भारत की चुनौती केवल सीमा पर बंदूक लेकर खड़े आतंकवादी से नहीं है। चुनौती उस पूरे तंत्र से है जिसमें आतंकवाद, हथियार, ड्रोन, नशीले पदार्थ, फर्जी सूचनाएं और सामाजिक विभाजन-सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पिछले एक दशक से अधिक समय में भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि उसने पाकिस्तान को यह संदेश दिया है कि आतंकवाद और बातचीत को समानांतर रास्तों पर नहीं चलाया जा सकता। 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक, 2019 की बालाकोट कार्रवाई और 2025 का ऑपरेशन सिंदूर अलग-अलग घटनाएं जरूर हैं, लेकिन इनके पीछे एक समान संदेश दिखाई देता है-भारत अब आतंकवाद को केवल सहने या निंदा करने तक सीमित नहीं रहेगा। इस बदले हुए भारत की तस्वीर पाकिस्तान की बेचैनी को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत की अर्थव्यवस्था, तकनीकी क्षमता, अंतरिक्ष कार्यक्रम, रक्षा उत्पादन, डिजिटल बुनियादी ढांचा, वैश्विक कूटनीति और रणनीतिक प्रभाव लगातार बढ़े हैं। आज भारत को विश्व राजनीति में केवल दक्षिण एशिया की शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक निर्णय-प्रक्रिया के महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखा जाता है। पाकिस्तान की समस्या केवल यह नहीं है कि भारत उससे आर्थिक और सामरिक रूप से आगे निकल रहा है, उसकी बड़ी समस्या यह है कि भारत अपनी बहुलतावादी लोकतांत्रिक पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है। जरदारी का बयान इसलिए भी विचारणीय है कि पाकिस्तान को भारत के भीतर की विविधता पर टिप्पणी करने से पहले अपने घर के भीतर झांकना चाहिए। भारत में मुसलमानों की आबादी बढ़ती आबादी का तथ्य स्वयं बताता है कि भारत में मुस्लिम समुदाय का अस्तित्व, विस्तार और सामाजिक जीवन किसी 'समाप्ति' की कहानी नहीं है। दूसरी ओर पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर आज भी अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाएं गंभीर चिंता व्यक्त कर रही हैं। इसलिए दुनिया के उन देशों को भी पाकिस्तान के प्रति अपनी नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए, जो केवल रणनीतिक या राजनीतिक हितों के कारण उसकी हर बात का समर्थन करते हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन उसके भाषणों से नहीं, उसके व्यवहार से होना चाहिए। यदि कोई देश एक तरफ आतंकवाद के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिबद्धता जताए और दूसरी तरफ उसकी धरती से सक्रिय आतंकी नेटवर्क लगातार पड़ोसी को निशाना बनाते रहें, तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय को केवल कूटनीतिक शब्दों से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। भारत की शक्ति का अर्थ किसी धर्म या देश के प्रति घृणा नहीं, बल्कि अपने नागरिकों की सुरक्षा, सीमाओं की रक्षा और आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई है। भारत के मुसलमान भी उतने ही भारतीय हैं जितने हिंदू, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध और अन्य समुदाय। आज पाकिस्तान के सामने सबसे बड़ा प्रश्न भारत नहीं, बल्कि स्वयं पाकिस्तान है-वह कब यह स्वीकार करेगा कि आतंकवाद को विदेश नीति का औजार बनाना अंततः उसी समाज को अस्थिर करता है जिसने उसे जन्म दिया? पाकिस्तान में आतंकवादी संगठनों की हिंसा का दंश स्वयं वहां के नागरिक भी झेल रहे हैं। 'ूमन राइटस वाच के अनुसार 2025 में पाकिस्तान में विभिन्न उग्रवादी संगठनों के हमलों में सैकड़ों लोग मारे गए। जरदारी को भारत के 'अखंड भारत' की चिंता करने से पहले अपने वर्तमान पाकिस्तान की अखंडता, शांति और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की चिंता करनी चाहिए। इतिहास का सबसे बड़ा व्यंग्य यही है कि जो राष्ट्र भारत की एकता पर प्रश्न उठाता है, वह स्वयं आतंकवाद, राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक संकट और सामाजिक विभाजन से जूझता रहा है।

# मैं अब नहीं लड़ता क्योंकि मैंने खुद को खोकर जीतना छोड़ दिया है

प्रो. आरके जैन
लेखक

जब जीवन बहुत कुछ सिखा देता है, तब इंसान हर आवाज का जवाब देना और हर लड़ाई लड़ना छोड़ देता है। वह कहता है-ह्लअब मैं नहीं लड़ता,ह्व तो दुनिया इसे उसकी कमजोरी समझ लेती है, जबकि यह अक्सर भीतर जागी हुई समझ का संकेत होता है। वह जान चुका होता है कि हर टकराव जरूरी नहीं और हर जीत की कीमत चुकाना समझदारी नहीं होती। कुछ विजय ऐसी होती हैं, जो बाहर तो जीत दिलाती हैं, लेकिन भीतर का सुकून छीन लेती हैं। इंसान की सबसे बड़ी हार किसी संघर्ष से पीछे हटना नहीं, बल्कि उस दिन होती है जब वह अपने मन की शांति और आत्मनिर्णय की शक्ति दूसरों और परिस्थितियों के हवाले कर देता है। आज का दौर शोर, विवाद और टकराव से भरा है। हर ओर बहसें, आरोप और विरोध की आवाजें हैं। समाचारों में विचारों की जगह संघर्ष दिखता है, सोशल मीडिया पर संवाद की जगह कटुता बढ़ रही है और राजनीति में समाधान से अधिक टकराव है। हर इंसान किसी न किसी लड़ाई में उलझा है—कोई रोजगार के लिए, कोई महँगाई से, तो कोई पहचान के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन इन लगातार लड़ाइयों ने इंसान की भीतर की शांति को कितना कमजोर किया है, इस पर ध्यान कम दिया जाता है। क्योंकि हर समय संघर्ष में रहने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी हँसी, सहजता और मानसिक शांति खो देता है।

आज संघर्ष का मैदान केवल बाहर नहीं, इंसान के घर और मन तक पहुँच चुका है। हर कोई किसी न किसी अदृश्य लड़ाई से गुजर रहा है—कोई पिता जिम्मेदारियों के बोझ में दबा है, कोई युवा सफलता की दौड़ में अपनी खुशियाँ खो रहा है और कोई कर्मचारी खुद को साबित करने की चिंता में जी रहा है। सोशल मीडिया ने बिना मैदान के भी हर व्यक्ति को योद्धा बना दिया है, जहाँ एक टिप्पणी, तस्वीर या विचार विवाद खड़ा कर देता है। लोग दूसरों को गलत साबित करने में इतने उलझ गए हैं कि खुद को समझने का समय नहीं बचा। चेहरे पर सफलता की चमक है, लेकिन भीतर गहरी थकान छिपी है। प्रकृति मौन रहकर जीवन का गहरा सत्य सिखाती है, जिसे मनुष्य अपनी भागदौड़ में भूल चुका है। नदी कभी पहाड़ से टकराकर अपनी शक्ति नहीं दिखाती, फिर भी अपना रास्ता बना लेती है। हवा कभी पेड़ों से संघर्ष नहीं करती, फिर भी उसकी मौजूदगी महसूस होती है। प्रकृति बताती है कि हर बदलाव के लिए संघर्ष जरूरी नहीं, कई बार धैर्य और निरंतरता ही सबसे बड़ी शक्ति होती है। लेकिन मनुष्य ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रतियोगिता में बदल दिया है। शिक्षा, रोजगार, रिश्ते और सामाजिक पहचान—हर जगह एक अदृश्य दौड़ चल रही है। इस दौड़ में इंसान अक्सर भूल जाता है कि वह किस मंजिल के लिए इतना संघर्ष कर रहा है।

मैंने लड़ना इसलिए छोड़ा है, क्योंकि अब समझ आया है कि हर युद्ध मेरा नहीं होता। कई मैदान दूसरों ने बनाए होते हैं, जिनमें हम बिना सोचे उतर जाते हैं। राजनीति को संघर्ष चाहिए, बाजार को दौड़ और मीडिया को विवाद—लेकिन इसकी कीमत आम इंसान अपनी ऊर्जा और शांति से चुकाता है। लोग ऐसे झगड़ों में उलझ जाते हैं, जिनका कोई अंत नहीं होता। व्यवस्था भी अक्सर यही चाहती है कि इंसान आपस में बंटा रहे, क्योंकि उलझे हुए लोग सवाल करना भूल जाते हैं। जब व्यक्ति हर बात पर प्रतिक्रिया देना छोड़ देता है, तभी वह सच में स्वतंत्र सोचने लगता है। हर संघर्ष से दूर होना हार नहीं, बल्कि जीवन की गहरी समझ है। परिपक्व इंसान जानता है कि हर लड़ाई जीतना जरूरी नहीं और हर बहस में खुद को सही साबित करना आवश्यक नहीं। जो बचपन में बिना तुलना के छोटी-छोटी खुशियों में जीता था, वही बड़ा होकर दूसरों से आगे निकलने की दौड़ में अपनी सहजता खो देता है। दुनिया हमें उपलब्धियों, जीत और प्रतिस्पर्धा को सफलता मानना सिखाती है, लेकिन असली खुशी तब मिलती है जब मन किसी से युद्ध करना छोड़ देता है। हर आरोप का जवाब देना जरूरी नहीं, हर विरोध से टकराना जरूरी नहीं और हर आवाज से ऊँची आवाज में बोलना भी समझदारी नहीं। जब दुनिया में शोर बढ़ जाता है, तब मौन का महत्व और गहरा हो जाता है। आज हर व्यक्ति अपनी बात मनवाने में व्यस्त है, ऐसे समय में किसी को समझने का प्रयास ही सच्ची इंसानियत है। मैंने अब लड़ना छोड़ दिया है, क्योंकि समझ गया हूँ कि सबसे बड़ी जीत किसी को हराने में नहीं, बल्कि खुद को संभालने में है। आर्थिक असमानता, राजनीतिक संघर्ष और डिजिटल तनाव से भरे इस दौर में जो व्यक्ति अपनी संवेदनशीलता बचाए रखता है, वही वास्तविक रूप से सफल है। क्योंकि दुनिया जीतते-जीतते अगर इंसान खुद को खो दे, तो उससे बड़ी हार कोई नहीं। ह्लमैं अब नहीं लड़ताह्व हार मान चुके इंसान की बात नहीं, बल्कि जीवन को समझ चुके व्यक्ति की पहचान है। वह हर विवाद में उलझना, हर उकसावे का जवाब देना और हर संघर्ष में शामिल होना छोड़ देता है। अब वह अपनी ऊर्जा उन मूल्यों के लिए बचाता है, जो जीवन को सार्थक बनाते हैं—प्रेम, विश्वास, करुणा और आत्मसम्मान। क्योंकि सच्ची जीत वही है, जिसमें इंसान अपनी आत्मा को सुरक्षित रख सके। जो हर समय दुनिया से जीतने में लगा रहता है, वह अक्सर खुद से हार जाता है; लेकिन जो संघर्षों से ऊपर उठ जाता है, वही वास्तविक स्वतंत्रता को महसूस करता है।

गरीबी बनी नासुर
उदय कशोर साह
कविता

बद्दुआ का मत बाँध सर पे सेहरा
उतर जायेगा हँसता तेरा चेहरा
जैसे हवा में उड़ जाता है कपूर
वजूद मिट जाता है आह से हुजूर

बेबसी की है जालिम ये संसार
गरीबों का ना होता जग में यार
लाचारी कर दी है इनको मजबूर
निर्दयी दुनियां की यही है दस्तुर

खून पसीना कितना भी बहाया
दो जून की रोटी कभी खा ना पाया
ईमानदारी की जब चढ़ती है सुरूर
फीका पड़ जाता है चेहरे की नूर

रोम रोम में है संस्कार इनपे सवार
किसी पे ना करते दीन अत्याचार
फिर भी गरीबी बन आई है नासुर
कब होगा घर से आभाव दूर

पर्णकुटी में है देखा महल का सपना
सारा जग है इनका अपना ही अपना
इनके किस्मत का है सब ही कसुर
फिर क्यों बेबस बनी हँसी क्यूँ है क्रूर

# वाह रे प्रजापालक: लुटेरों को वरदानों की सौगात; अन्नदाता पर दरिद्रता की बरसात?

एनके शर्मा
लेखक

जिस देश में अन्न को ब्रह्म कहा गया, जिस सभ्यता ने किसान को 'अन्नदाता' कहकर उसके श्रम को देवत्व प्रदान किया, उसी देश में आज सबसे असहज कर देने वाला प्रश्न यही है— जो व्यक्ति पूरे राष्ट्र का पेट भरता है, उसका अपना पेट अधूरा क्यों है? यह प्रश्न किसी एक दल, किसी एक सरकार या किसी एक नेता के विरुद्ध राजनीतिक नारा नहीं है। यह उस शासन-व्यवस्था के चरित्र पर सवाल है, जो किसान के कंधे पर राष्ट्र की खाद्य-सुरक्षा का भार रखकर उसके हाथ में आर्थिक असुरक्षा थमा देती है। सत्ता के शिखरों पर बैठे माननीयों के लिए वेतन, भत्ते, आवास, यात्रा, सुरक्षा, चिकित्सा और अन्य संस्थागत सुविधाओं की व्यवस्था होती है। उच्च प्रशासनिक वर्ग के लिए पद के अनुरूप संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। पूंजी के लिए नीतियाँ, ऋण, निवेश, बाजार और प्रोत्साहन की पूरी आर्थिक भाषा मौजूद है। बड़े कारोबार के लिए जोखिम कम करने के रास्ते खोजे जाते हैं।

लेकिन किसान? उसके हिस्से में मौसम का जोखिम, बाजार का जोखिम, कर्ज का जोखिम, लागत का जोखिम, बीमारी का जोखिम और फसल नष्ट होने का जोखिम—सब कुछ है। उसके पास न महँगे वकीलों की फौज है, न नीति-निमार्ताओं तक पहुँच रखने वाली प्रभावशाली लॉबी, न बाजार की कीमत तय करने की ताकत। फिर भी उससे अपेक्षा है कि वह देश को अन्न देता रहे।

यह कैसा आर्थिक न्याय है? सरकार की PM-KISAN योजना पात्र किसान परिवारों को ₹6,000 सालाना आय सहायता देती है, तीन समान किस्तों में। यह सहायता निश्चित रूप से उपयोगी है; लेकिन स्वयं सरकार के आँकड़े बताते हैं कि कृषि क्षेत्र में जोखिम प्रबंधन, स्थिर आय और सामाजिक सुरक्षा अभी भी नीति की महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। सवाल यह नहीं कि किसान को ₹6,000 क्यों दिए गए। सवाल यह है कि किसान की आर्थिक संरचना ऐसी क्यों नहीं बनाई गई कि उसे सम्मानजनक जीवन के लिए इतनी छोटी सहायता पर निर्भर न रहना पड़े? गरीबी पर मरहम लगाना और गरीबी पैदा करने वाली व्यवस्था को बदलना—दो अलग बातें हैं।

किसान को खैरात नहीं चाहिए। उसे ऐसी कृषि-अर्थव्यवस्था चाहिए जिसमें उसकी लागत सुरक्षित हो, उत्पादन का उचित मूल्य सुनिश्चित हो, भुगतान समय पर मिले, फसल नष्ट होने पर वास्तविक क्षतिपूर्ति मिले और उसकी मेहनत का आर्थिक प्रतिफल इतना हो कि वह अपने बच्चों की शिक्षा, परिवार की चिकित्सा और अपने बुढ़ापे की सुरक्षा स्वयं कर सके।

आज भी कृषि की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि किसान लागत का मालिक नहीं, लेकिन जोखिम का मालिक अवश्य बना दिया गया है। बीज महँगा है—किसान खरीदे। खाद महँगी है—किसान खरीदे। डीजल महँगा है—किसान भुगतान करे। मजदूरी बढ़ी—किसान दे। बिजली, सिंचाई, मशीनरी, परिवहन और भंडारण—सबकी लागत किसान उठाए। लेकिन जब फसल बाजार में पहुँचे तो कीमत कौन तय करेगा? अक्सर किसान नहीं। यही वह बिंदु है जहाँ किसान की मेहनत और बाजार की शक्ति आमने-सामने खड़ी दिखाई देती है। सरकारें MSP की घोषणा करती हैं, उत्पादन बढ़ने के आँकड़े प्रस्तुत करती हैं, कृषि बजट में वृद्धि बताती हैं और किसान कल्याण की योजनाओं की लंबी सूची गिनाती हैं। सरकारी आँकड़ों के अनुसार कृषि एवं किसान कल्याण विभाग का बजटीय प्रावधान 2013-14 के लगभग ₹21,934 करोड़ से बढ़कर 2025-26 में लगभग ₹1.38 लाख करोड़ हुआ है तथा खाद्यान्न उत्पादन भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

लेकिन असली कसौटी बजट का आकार नहीं— किसान की आय और जीवन की सुरक्षा है। यदि उत्पादन बढ़ता रहे लेकिन उत्पादक आर्थिक रूप से असुरक्षित बना रहे, तो विकास का प्रश्न अधूरा है। यदि देश खाद्यान्न के मामले में मजबूत होता जाए लेकिन अन्नदाता अपनी अगली फसल के लिए कर्ज लेने को विवश रहे, तो व्यवस्था को अपने उत्सवों के बीच आत्ममंथन करना चाहिए।

और यही वह स्थान है जहाँ सत्ता की नीतियों से सबसे तीखा सवाल पूछा जाना चाहिए। क्या किसान नीति का केंद्र है या केवल नीति की भाषा का हिस्सा? चुनाव आते हैं तो किसान 'अन्नदाता' हो जाता है। घोषणाएँ होती हैं तो वह 'देश की रीढ़' बन जाता है। बजट आता है तो उसके नाम पर योजनाएँ गिनाई जाती हैं। लेकिन जब वह अपनी उपज के उचित मूल्य, कर्ज, बीमा, लागत और वास्तविक आय की बात करता है, तब वह अचानक फाइल, प्रक्रिया, समिति और नियमों के बीच खो जाता है। यह विरोधाभास लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। किसान को लगातार यह समझाया जाता है कि वह राष्ट्र की सेवा कर रहा है।

लेकिन क्या राष्ट्र भी किसान की सेवा करने को तैयार है? यदि कोई सैनिक सीमा पर खड़ा होकर राष्ट्र की रक्षा करता है तो राष्ट्र उसके लिए सुरक्षा, सम्मान और सामाजिक संरक्षण को अपना दायित्व मानता है। फिर खेत की सीमा पर मौसम, बाजार और भूख से लड़ने वाले किसान के लिए समान गंभीरता क्यों नहीं? किसान की त्रासदी यह भी है कि उसका शोषण केवल बाजार नहीं करता; कई बार वह प्रशासनिक जटिलताओं, स्थानीय भ्रष्टाचार, बिचौलियों, ऋण-व्यवस्था और कमजोर क्रियान्वयन के बीच भी पिसता है।

योजना बनाना आसान है। योजना का विज्ञापन करना उससे भी आसान है। लेकिन योजना का अंतिम लाभ उस किसान तक पहुँचाना ही असली शासन है। यहीं हमारी व्यवस्थाएँ बार-बार कठघरे में खड़ी होती हैं। कागज पर किसान सशक्त है। विज्ञापन में किसान समृद्ध है। भाषण में किसान सम्मानित है। लेकिन खेत में? वह आज भी आसमान देखकर मौसम का अनुमान लगाता है और मंडी देखकर अपनी किस्मत। यह विडम्बना जितनी आर्थिक है, उससे कहीं अधिक नैतिक है। क्योंकि किसान केवल एक उत्पादक नहीं है। वह खाद्य सुरक्षा का आधार है।

उसके श्रम से शहर चलते हैं, उद्योगों की खाद्य-श्रृंखला चलती है, स्कूलों और अस्पतालों तक भोजन पहुँचता है और करोड़ों परिवारों की रसोई जलती है। सरकारी आँकड़ों में कृषि परिवारों की औसत आय में वृद्धि के संकेत अवश्य मिलते हैं; ठअइअफ्क के सर्वेक्षण के अनुसार 2021-22 में कृषि परिवारों की औसत मासिक आय ₹13,661 बताई गई थी।

लेकिन उसी व्यापक ग्रामीण वास्तविकता में खेती की लागत, उपभोग व्यय, ऋण और आय के स्रोतों की विविधता को भी समझना आवश्यक है। अतः केवल औसत आय का आंकड़ा प्रस्तुत करके किसान की वास्तविक समृद्धि घोषित कर देना भी अधूरा निष्कर्ष होगा। किसान की समृद्धि का पैमाना उसके बैंक खाते में आने वाली किसी एक किस्त से नहीं, बल्कि पूरे वर्ष के अंत में उसके पास बची हुई आर्थिक सुरक्षा से तय होना चाहिए। और यही वह प्रश्न है जिससे सत्ता अक्सर असहज होती है। क्योंकि यदि किसान को सचमुच आर्थिक रूप से स्वतंत्र बना दिया गया, तो उसे हर चुनाव में राहत, अनुदान और घोषणा के नाम पर आश्वासन बेचने की जरूरत कम हो जाएगी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक ललित कुमार द्वारा वेलकम इंडिया प्रिन्टर्स, 1/26, साउथ साइड, जी टी रोड़, गाजियाबाद-201001 से मुद्रित कराकर ग्राउन्ड फ्लोर, दुर्गा टॉवर, आर.डी.सी राजनगर, गाजियाबाद 201002 से प्रकाशित किया। संपादक : ललित शर्मा
सम्पर्क सूत्रः 9891116568

किसी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा गाजियाबाद न्यायालय में ही होगा।

# फिर बढा प्रतापगढ़ का राजनीतिक कद अमरपाल मौर्य बने भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

विजय द्विवेदी/वेलकम इंडिया

**प्रतापगढ़।** अमरपाल मौर्य को भाजपा ओ बी सी मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने पर प्रतापगढ़ भाजपा कार्यकताओं मे जबरदस्त खुशी है। राजनीतिक चर्चाओ के बीच लोगो मे चर्चा है कि जनपद के युवा रोहित मिश्रा को यूपी भाजपा युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष का पद और अब अमरपाल मौर्य को ओ बी सी मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष पद मिलना बताता है प्रदेश व देश की राजनीति मे प्रतापगढ़ का सियासी कद एक बार फिर ऊँचा हुआ है। भारतीय जनता पार्टी के संगठन में प्रतापगढ़ का कद लगातार बढ़ता नजर आ रहा है। करीब एक माह पहले जिले के युवा नेता रोहित मिश्र को भाजपा युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद अब पार्टी ने प्रतापगढ़ के ही अमरपाल मौर्य को भाजपा ओबीसी मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त कर जिले को एक और बड़ी सौगात दी है। महज एक माह के भीतर जिले के दो नेताओं को प्रदेश और राष्ट्रीय संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलना राजनीतिक रूप से खासा महत्वपूर्ण माना जा रहा है। रोहित मिश्र को युवा मोर्चा की प्रदेश कमान मिलने के बाद से ही प्रतापगढ़ में इसे संगठन के बढ़ते प्रभाव के रूप में देखा जा रहा था। अब अमरपाल मौर्य को ओबीसी मोर्चे का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने से यह चर्चा और तेज हो गई है। अमरपाल मौर्य अब देशभर में भाजपा के ओबीसी संगठन को दिशा देने और समाज के बीच पार्टी की पहुंच मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। एक माह के भीतर प्रतापगढ़ के दो नेताओं का प्रदेश से राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचना संयोग भर नहीं, बल्कि संगठन में जिले की बढ़ती राजनीतिक अहमियत का संकेत माना जा रहा है। खास बात यह है कि रोहित मिश्र जहां उत्तर प्रदेश में युवा मोर्चे की कमान संभाल रहे हैं, वहीं अमरपाल मौर्य को अब पूरे देश में ओबीसी मोर्चे का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी मिली है। भाजपा कार्यकताओं में दोनों नियुक्तियों को लेकर उत्साह है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि लगातार मिली इन जिम्मेदारियों से प्रतापगढ़ की भाजपा संगठन में पकड़ और मजबूत होगी। साथ ही जिले के कार्यकताओं और युवाओं को यह संदेश भी जाएगा कि स्थानीय स्तर पर सक्रियता और संगठन के प्रति समर्पण के बूते प्रदेश ही नहीं, राष्ट्रीय राजनीति में भी जगह बनाई जा सकती है। वैसे चर्चा तो यह भी है कि मात्र एक विधायक ही जनपद मे भाजपा का है। जिस तरह से सांसद सगमलालगुप्ता हारकर पूर्व सासद बन गये और दिग्गज नेता मोती सिह भी मन्त्री से पूर्व मन्त्री बने व धीरज ओझा जैसा फायरब्रान्ड नेता भितरघात और टिकट देने मे देरी के कारण चुनाव हार पूर्व विधायक बन गये। से मे भाजपा प्रतापगढ़ मे बेहद नीचे पहुच गयी है। ऐसे मे जिले के दो नेताओ को सर्वोच्च पद मिलने से जिले के भाजपा कार्यकताओं मे एक बार फिर जोश पैदा हुआ है।

# स्वतंत्रता दिवस पर ऑल इंडिया हिन्दुस्तान कांग्रेस पार्टी के प्रदेश कार्यालय में किया गया ध्वजारोहण

वेलकम इंडिया/राजेंद्र सिंह वरिष्ठ

**हापुड़।** ऑल इंडिया हिन्दुस्तान कांग्रेस पार्टी के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रदेश कार्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष पं. गोपाल शर्मा एवं हापुड़ जिलाध्यक्ष अजय शर्मा ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण किया। इसके बाद टीएसएस इंटर कॉलेज के छात्र लक्ष्य शर्मा, वंशिका शर्मा एवं शिवम ने राष्ट्रीय गान प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर प्रदेशाध्यक्ष पं. गोपाल शर्मा ने प्रदेश कार्यालय से देशवासियों को संबोधित करते हुए स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भारत के राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस पर देश के अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करता हूं। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध 1857 के क्रांतिकारी आंदोलन में बलिदान देने वाले अमर शहीदों के योगदान को देश कभी नहीं भुला सकता। जिलाध्यक्ष अजय शर्मा ने पार्टी के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान प्रदेश कार्यालय परिसर में पुलिस सुरक्षा बल भी मौजूद रहा। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश कोषाध्यक्ष आशीष शर्मा ने किया। स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर स्कूल-कॉलेज के बच्चों एवं पत्रकार बंधुओं को उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधानाचार्य मूलचंद शर्मा, चौधरी रविकिरण, धर्मवीर कश्यप, नितिन निर्वाण, महंत एनके त्रिपाठी, महेश कनछेड़ शर्मा, आशु, सुनील शर्मा, कविता, रश्मि, सरिता, अनीता सहित पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

# आभा फाउंडेशन का आठवां निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित, 2200 लोगों की हुई आंखों की जांच

वेलकम इंडिया/नितिन शर्मा

**चांदपुर।** समाजसेवा के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही आभा फाउंडेशन द्वारा आठवें निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में क्षेत्र के बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर अपनी आंखों की जांच कराई। इस दौरान 2200 लोगों की आंखों की जांच की गई। जांच के दौरान 260 लोगों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया, जबकि 1940 लोगों को निःशुल्क चश्मे एवं दवाइयां उपलब्ध कराई गईं। मोतियाबिंद के लिए चयनित मरीजों को सोमवार से बिजनौर भेजने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। मरीजों को 30-30 के समूह में बिजनौर ले जाकर ऑपरेशन कराया जाएगा। आभा फाउंडेशन की ओर से मरीजों के आने-जाने का खर्च, रहने की व्यवस्था, ऑपरेशन, दवाइयां एवं चश्मे सहित सभी सुविधाएं पूरी तरह निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। इससे जरूरतमंद लोगों को बिना किसी आर्थिक बोझ के बेहतर नेत्र उपचार मिल सकेगा।

ज्ञात हो कि यह आभा फाउंडेशन द्वारा आयोजित आठवां नेत्र चिकित्सा शिविर था। इससे पहले आयोजित शिविरों के माध्यम से लगभग 10,000 लोगों को चश्मों का वितरण, 450 लोगों के मोतियाबिंद के ऑपरेशन तथा लगभग 16,000 लोगों को निःशुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। आभा फाउंडेशन की समाजसेविका आभा सिंह द्वारा लगातार जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। नेत्र चिकित्सा शिविर के साथ-साथ कुकर वितरण, साइकिल वितरण, सामूहिक विवाह सहित अनेक जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से जरूरतमंद परिवारों तक सहायता पहुंचाई जा रही है।

# नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम में सम्मानित हुईं नारी शक्तियां

वेलकम इंडिया संवाददाता

**बिजनौर।** कान्हा बैंक्वेट हॉल, नजीबाबाद में 'नारी शति वंदन' कार्यक्रम का गरिमामय आयोजन किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका लीना सिंघल रही। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज और राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिलाओं का सम्मान करना रहा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अपर जिला अधिकारी अंशिका दीक्षित, रूबी गुप्ता और अंशु चावला, आकांक्षा गौतम, मुक्ता सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि अंशिका दीक्षित ने कहा कि महिलाओं की प्रतिभा, साहस, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता की सराहना करते हुए कहा कि आज महिलाएं शिक्षा, प्रशासन, सामाजिक सेवा, पर्यावरण, संस्कृति और अन्य अनेक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बना रही हैं। महिला सम्मान केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि समाज को सशक्त और प्रगतिशील बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम में जिला बाल संरक्षण अधिकारी रूबी गुप्ता, उप प्रभागीय वन अधिकारी अंशु चावला, पुलिस क्षेत्र अधिकारी आकांक्षा गौतम, अधिशासी अधिकारी मुक्ता सिंह, कमलेश आर्या, अनुराधा माथुर, मंजू जौहरी, उमा महेश्वरी, वर्षा अग्रवाल, गंगा देवी, वैष्णवी सैन, हिमाशी प्रजापति सहित विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय महिलाओं को सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाली महिलाओं के योगदान की सराहना करते हुए उन्हें समाज की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बताया गया।

कार्यक्रम में ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल एवं सुशील आर्य डांस अकादमी स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। बच्चों की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में उत्साह और उमंग का वातावरण बना दिया तथा उपस्थित सभी लोगों ने उनका उत्साहवर्धन किया।कार्यक्रम का सफल संचालन मंजू जौहरी ने किया। कार्यक्रम में महिलाओं के सम्मान, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी को लेकर सकारात्मक संदेश दिया गया। कार्यक्रम संयोजक एवं पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष लीना सिंघल ने अपने स्वागत भाषण में कार्यक्रम में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नारी केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति की मजबूत शक्ति है। जब एक महिला आगे बढ़ती है तो उसके साथ पूरा परिवार आगे बढ़ता है और जब समाज महिलाओं को सम्मान, समान अवसर और सुरक्षित वातावरण प्रदान करता है, तो राष्ट्र की प्रगति और भी तेज होती है। ऐसे आयोजन महिलाओं के योगदान को पहचान देने के साथ-साथ नई पीढ़ी को भी यह संदेश देते हैं कि नारी का सम्मान, समाज का सम्मान है। नारी शक्ति को नमन और उन सभी महिलाओं को हार्दिक शुभकामनाएं, जो अपने कार्यों से समाज में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। कार्यक्रम में नगर पालिका सभासद इंदु राजपूत, मनीष सैनी, बबीता तायल, कुमारी दीपा, अंजू सिंह, दीपा चौधरी, ठाकुर मनोज सिंह आदि का सहयोग रहा।

# लज्जापुरी मोहल्ले में महिलाओं ने धूमधाम से मनाया तीज महोत्सव

वेलकम इंडिया/राजेंद्र सिंह वरिष्ठ

**हापुड़।** जनपद हापुड़ के लज्जापुरी मोहल्ले में महिलाओं द्वारा तीज महोत्सव धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान मोहल्ले की महिलाओं ने मिल-जुलकर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और तीज पर्व की खुशियां साझा कीं।कार्यक्रम के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ तीज का त्योहार मनाया। महिलाओं ने एक-दूसरे को तीज पर्व की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम स्थल को आकर्षक ढंग से सजाया गया था, जहां महिलाओं में उत्साह और उमंग का माहौल देखने को मिला। आयोजक महिलाओं ने बताया कि लज्जापुरी मोहल्ले में पिछले चार वर्षों से लगातार तीज का त्योहार सामूहिक रूप से मनाया जा रहा है। हर वर्ष की तरह इस बार भी बड़ी संख्या में महिलाओं ने एकजुट होकर कार्यक्रम में भाग लिया। महिलाओं ने कहा कि इस तरह के सामूहिक आयोजनों से आपसी प्रेम, भाईचारा और सौहार्द बढ़ता है। साथ ही नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक त्योहारों से जुड़ने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम के अंत में सभी महिलाओं ने एक-दूसरे को तीज की शुभकामनाएं देते हुए आयोजन को सफल बनाने में सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

# स्मृति ईरानी को राष्ट्रीय महामंत्री बनाए जाने पर अमेठी में जश्न

वेलकम इंडिया संवाददाता

**शुकुल बाजार/अमेठी।** भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेत्री एवं अमेठी की पूर्व सांसद स्मृति जुबिन ईरानी को पार्टी का राष्ट्रीय महामंत्री बनाए जाने की घोषणा के बाद अमेठी में भाजपा कार्यकताओं में उत्साह का माहौल है। जिले के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं ने खुशी जताते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए बधाई दी।

शुकुल बाजार कस्बे में वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पांच बार जिला उपाध्यक्ष रह चुके गिरीश चंद्र शुक्ला के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एकत्र हुए। कार्यकताओं ने आतिशबाजी कर खुशी का इजहार किया और एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दी। इस दौरान भाजपा कार्यकताओं के नारों से वातावरण उत्साहपूर्ण हो गया।

कार्यकताओं ने कहा कि स्मृति ईरानी को पार्टी संगठन में राष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलना अमेठी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि अमेठी से अपने जुड़ाव के दौरान स्मृति ईरानी ने संगठन और जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों को मजबूती से उठाया। राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में उनकी नई जिम्मेदारी से पार्टी संगठन को और मजबूती मिलने की उम्मीद है। जिला मुख्यालय सहित विभिन्न मंडलों में भी भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने हर्ष व्यक्त किया। जिला अध्यक्ष सुधांशु शुक्ला सहित पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और पदाधिकारियों ने स्मृति ईरानी को नई जिम्मेदारी के लिए बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता गिरीश चंद्र शुक्ला, उद्योगपति एवं वरिष्ठ भाजपा नेता महेंद्र विजय सिंह, विद्यालय प्रबंधक एवं शुकुल बाजार व्यापार मंडल अध्यक्ष पंडित राम उंजेरे शुक्ला, भाजपा मीडिया विभाग के जिला सहसंयोजक एवं वरिष्ठ पत्रकार सुशील कुमार मिश्रा, पूर्व मंडल अध्यक्ष शंकर बक्श सिंह, संजय कौशल, मनोज शर्मा, रामकुमार, रमेश शुक्ला, राजीव पांडे, विश्व प्रकाश शुक्ला, डॉ. ओंकार नाथ सिंह, विजय गुप्ता, विनय चौरसिया, अरुण शंकर शुक्ला सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यकताओं ने कहा कि स्मृति ईरानी को मिली नई जिम्मेदारी अमेठी के भाजपा कार्यकताओं के लिए गर्व और उत्साह का विषय है। उन्होंने संगठन को और मजबूत करने तथा जनसेवा के संकल्प को आगे बढ़ाने की बात कही।

# दिव्यांगजनों की तिरंगा यात्रा का विरेंद्र कुमार शिरीष ने किया शुभारंभ

वेलकम इंडिया/राजेंद्र सिंह वरिष्ठ

**हापुड़।** स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिव्यांगजनों की टीम द्वारा भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा के शुभारंभ अवसर पर आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष विरेंद्र कुमार शिरीष ने रिबन काटकर एवं दिव्यांगजनों को मिठाई खिलाकर तिरंगा यात्रा का विधिवत शुभारंभ किया इस अवसर पर विरेंद्र कुमार शिरीष ने तिरंगा यात्रा में शामिल सभी दिव्यांगजनों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि देश की आजादी का पर्व सभी देशवासियों के लिए गौरव का अवसर है और दिव्यांगजनों की इस तिरंगा यात्रा ने देशभक्ति एवं सामाजिक एकता का संदेश दिया है। तिरंगा यात्रा के दौरान दिव्यांगजनों में खासा उत्साह देखने को मिला। यात्रा में शामिल लोगों ने देशभक्ति की भावना के साथ तिरंगा लहराया और राष्ट्र के प्रति एकजुटता का संदेश दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे और सभी ने उत्साहपूर्वक तिरंगा यात्रा में सहभागिता की।

# राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए न्यायिक, प्रशासनिक व बैंक अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

वेलकम इंडिया/राजेंद्र सिंह वरिष्ठ

**हापुड़।** आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 12 सितंबर 2026 (शनिवार) को सफल बनाने के उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हापुड़ की ओर से न्यायिक, प्रशासनिक एवं बैंक अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता माननीय जिला जज/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हापुड़ अजय कुमार सिंह प्रथम ने की।बैठक का संचालन अपर जिला जज एवं नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय लोक अदालत अवनीश कुमार राय की देखरेख में अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हापुड़ डॉ. ब्रह्मपाल सिंह द्वारा किया गया।बैठक में अपर जिला जज एवं नोडल अधिकारी अवनीश कुमार राय ने समस्त न्यायिक अधिकारियों को राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक वादों के निस्तारण के लिए चिन्हित मामलों में लोक अदालत से पूर्व अधिक से अधिक नोटिस एवं सम्मन जारी करने के निर्देश दिए।वहीं, उपस्थित प्रशासनिक अधिकारियों को लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए अधिक से अधिक मामलों को चिन्हित कर उनका निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। लीड बैंक मैनेजर, केनरा बैंक आशीष सक्सैना को जनपद के सभी बैंकों से संबंधित लोन रिकवरी के मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक संख्या में निस्तारित कराने के निर्देश दिए गए।बैठक में उपजिलाधिकारी गढ़मुक्तेश्वर रेनू सिंह, पी.डी. डी.आर.डी.ए. हापुड़ अनवर शेख सहित समस्त प्रशासनिक एवं बैंक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

# शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी का मिला स्नेह, आशीर्वाद और मार्गदर्शन

वेलकम इंडिया/राजेंद्र सिंह वरिष्ठ

**हापुड़/गढ़मुक्तेश्वर।** गढ़मुक्तेश्वर विधानसभा प्रतिनिधि के रूप में आशुतोष शर्मा को जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी का स्नेह, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस दौरान लगातार चार दिनों तक शंकराचार्य जी के साथ विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया तथा क्षेत्र के विकास और जनसेवा को लेकर आगे की कार्ययोजना तैयार की गई।आशुतोष शर्मा ने कहा कि शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी के मार्गदर्शन से उन्हें नई ऊर्जा और दिशा मिली है। अब गढ़मुक्तेश्वर विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक वर्ग और समाज के लोगों के बीच पहुंचकर जनसेवा एवं क्षेत्रहित में कार्य किया जाएगा।उन्होंने कहा कि विधानसभा के गांव-गांव और क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचने का प्रयास किया जाएगा तथा लोगों की समस्याओं को समझकर उनके समाधान के लिए निरंतर प्रयास किए जाएंगे। इस दौरान तैयार की गई कार्ययोजना को धरातल पर लागू करने की दिशा में जल्द ही कार्य शुरू किया जाएगा।

# कांग्रेस संगठन सृजन अभियान की बैठक में उमड़ा जनसैलाब, कांग्रेस ने दिखाई संगठन की ताकत

हापुड़ (वेलकम इंडिया)। जनपद हापुड़ के ग्राम सिखेड़ा में कांग्रेस के 'संगठन सृजन अभियान' के तहत बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दूसरे दिन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पर्यवेक्षक चेतन चौहान, प्रदेश कांग्रेस कमेटी पर्यवेक्षक नरेंद्र चौहान एवं पंकज तेजानिया ने पहुंचकर कार्यकताओं एवं स्थानीय लोगों से संवाद किया। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बैठक को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पर्यवेक्षक चेतन चौहान ने कहा कि दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है। यदि 2029 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनानी है और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाना है, तो 2027 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को अधिक से अधिक सीटों पर जीत हासिल कर उत्तर प्रदेश की सत्ता में लाना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले 12 वर्षों से प्रदेश में भाजपा की सरकार है और अब समय आ गया है कि 2027 के विधानसभा चुनाव में इस स्थिति को बदला जाए। उन्होंने कहा कि संगठन सृजन अभियान का उद्देश्य प्रत्येक जनपद में जाकर पार्टी कार्यकताओं एवं लोगों से संवाद करना है। इस दौरान यह भी जाना जा रहा है कि लोग वर्तमान जिलाध्यक्ष और शहर अध्यक्ष के कार्यों से संतुष्ट हैं या नहीं तथा यदि बदलाव की आवश्यकता महसूस होती है तो वे किसे जिलाध्यक्ष एवं शहर अध्यक्ष के रूप में देखना चाहते हैं। कांग्रेस जिलाध्यक्ष राकेश त्यागी ने कहा कि जिलाध्यक्ष का पद संभालने के बाद ग्राम सिखेड़ा में यह चौथी बैठक है। उन्होंने कहा कि जब भी वह ग्राम सिखेड़ा आते हैं, उन्हें स्थानीय लोगों का भरपूर प्यार और समर्थन मिलता है, जिसके लिए वह सभी के आभारी हैं। उन्होंने कहा कि उनके लिए जिलाध्यक्ष का पद कोई महत्व नहीं रखता। वह अध्यक्ष रहें या न रहें, पार्टी के सिपाही और राहुल गांधी की टीम के एक छोटे से कार्यकर्ता के रूप में हमेशा कांग्रेस की सेवा करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि जब भी क्षेत्र के लोग उन्हें बुलाएंगे अथवा पार्टी की ओर से कोई निर्देश मिलेगा, वह पूरी निष्ठा के साथ पार्टी की सेवा के लिए समर्पित रहेंगे। कार्यक्रम का संचालन जिला प्रवक्ता एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष अधिवक्ता शहजादा चौधरी ने किया।

# पारंपरिक खेलों के साथ एडवेंचर और आइस स्पोर्ट्स को बढ़ावा: मुख्यमंत्री

## एशियन ओपन शॉर्ट ट्रैक स्पीड स्केटिंग ट्रॉफी का शुभारंभ, उत्तराखंड को अंतरराष्ट्रीय खेल केंद्र बनाने पर जोर

वेलकम इंडिया संवाददाता

**देहरादून।** महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एशियन ओपन शॉर्ट ट्रैक स्पीड स्केटिंग ट्रॉफी 2026 का शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता 20 अगस्त तक चलेगी। आयोजन में देश-विदेश से खिलाड़ी, प्रशिक्षक और तकनीकी अधिकारी प्रतिभाग कर रहे हैं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने आए खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और अधिकारियों का उत्तराखंड में स्वागत करते हुए सभी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड के लिए यह गौरव का विषय है कि प्रदेश को एशियन ओपन शॉर्ट ट्रैक स्पीड स्केटिंग ट्रॉफी जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय आयोजन की मेजबानी का अवसर

मिला है। इससे उत्तराखंड की पहचान शीतकालीन और आइस स्पोर्ट्स के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अनुकूल गंतव्य के रूप में और मजबूत होगी। मुख्यमंत्री ने आयोजन से जुड़े आयोजकों, प्रशिक्षकों, तकनीकी अधिकारियों और सहयोगियों को प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार उत्तराखंड को खेलों के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। पिछले वर्ष प्रदेश में 38वें राष्ट्रीय खेलों का सफल आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से आधुनिक एवं विश्वस्तरीय खेल अवस्थापना का मजबूत आधार तैयार हुआ। इसी का परिणाम है कि उत्तराखंड अब अंतरराष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने में सक्षम हो रहा है। मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में स्पोर्ट्स लेगेसी प्लान लागू करने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। इसके तहत आठ प्रमुख शहरों में 23 खेल अकादमियां स्थापित की जाएंगी, जहां खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण की सुविधाएं मिलेंगी। हल्द्वानी में प्रदेश के पहले खेल विश्वविद्यालय की स्थापना का कार्य भी तेजी से चल रहा है, जबकि लोहाघाट में महिला स्पोर्ट्स कॉलेज शुरू हो चुका है। उन्होंने कहा कि राज्य की नई खेल नीति के तहत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को सरकारी सेवा में अवसर दिए जा रहे हैं। प्रतिभावान खिलाड़ियों को खेल छात्रवृत्ति के साथ आवासीय स्पोर्ट्स कॉलेजों में निःशुल्क शिक्षा और प्रशिक्षण की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। मुख्यमंत्री खेल विकास निधि, मुख्यमंत्री खिलाड़ी प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी योजना और खेल किट योजना जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार पारंपरिक खेलों के साथ-साथ वॉटर स्पोर्ट्स, एडवेंचर स्पोर्ट्स, विंटर स्पोर्ट्स और आइस स्पोर्ट्स को भी बढ़ावा दे रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि उत्तराखंड देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के खिलाड़ियों के लिए पसंदीदा खेल प्रशिक्षण केंद्र के रूप में विकसित हो। इस अवसर पर विधायक उमेश शर्मा काऊ, एशियन स्केटिंग यूनियन के अध्यक्ष म्योंग ही चांग, आइस स्केटिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष अमिताभ शर्मा, विशेष प्रमुख सचिव खेल अमित सिन्हा, निदेशक खेल दीप्ति सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

## पुलिस अधीक्षक एवं अपर जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस पर तहसील मेंहदावल में सुनी जनता की समस्याएं, दिए गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश

वेलकम इंडिया संवाददाता

**संतकबीरनगर।** सोमवार को पुलिस अधीक्षक संदीप कुमार मीना एवं अपर जिलाधिकारी ने तहसील मेंहदावल में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में पहुंचकर जनसामान्य की समस्याओं एवं शिकायतों को सुना गया। इस दौरान पुलिस एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में फरियादियों की शिकायतों को मौके पर सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि प्रत्येक शिकायत का मौके पर जाकर निष्पक्ष, गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध तरीके से शत-प्रतिशत निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। पुलिस एवं राजस्व विभाग से संबंधित शिकायतों के निस्तारण में आपसी समन्वय एवं सामंजस्य बनाए रखते हुए प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों को स्पष्ट निर्देशित किया गया कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर लापरवाही अथवा शिथिलता क्षम्य नहीं होगी। तत्पश्चात अधिकारियों द्वारा शिकायत पंजिका का निरीक्षण कर पूर्व में निस्तारित शिकायतों के संबंध में फीडबैक भी लिया गया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस अवसर पर राजस्व एवं पुलिस विभाग के संबंधित अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

## सरकार से नहीं, संस्कार से समाप्त होगा नशा: प्रदीप सिसोदिया

### सेमरियावां में 'ड्रग मुक्त जन अभियान' के तहत जागरूकता बैठक, 200 से अधिक लोगों ने लिया नशामुक्त समाज का संकल्प

वेलकम इंडिया संवाददाता

**संतकबीरनगर।** खलीलाबाद तहसील क्षेत्र के सेमरियावां विकासखंड की दुधारा और परसाशेख न्याय पंचायतों में रविवार को 'ड्रग मुक्त जन अभियान' के तहत जागरूकता बैठक आयोजित की गई। चंद्रा शिक्षण संस्थान में प्रगति सेवा संस्थान के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का नेतृत्व अभियान के राष्ट्रीय संयोजक एवं यूथ आइकन अवार्डी प्रदीप सिसोदिया ने किया। कार्यक्रम में दो सौ से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया और समाज को नशामुक्त बनाने का संकल्प लिया। बैठक में दुधारा न्याय पंचायत के कोहरियावा, जोतडीह, दुबौलिया, पिपरा गोविंद, मदारपुर, घुसुरा और दरियाबाद तथा परसाशेख न्याय पंचायत के अहिरौली, छंगुलिया बगुलिया, दिघवा, मुहम्मदगढ़, परसाशेख और सिसवा दाखिल सहित विभिन्न क्षेत्रों के

लोग शामिल हुए। अपने संबोधन में प्रदीप सिसोदिया ने कहा कि कम उम्र के युवा और युवतियां तेजी से नशे के जाल में फंस रहे हैं। युवा शक्ति देश की सबसे बड़ी पूंजी है और इसे नशे से बचाना पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

प्रदीप सिसोदिया ने कहा कि जब परिवार का मुखिया नशे की हालत में घर पहुंचता है तो घर का वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है और इसका सीधा प्रभाव बच्चों के मानसिक एवं सामाजिक विकास पर पड़ता है। नशे के कारण घरेलू हिंसा, सड़क दुर्घटनाओं और चोरी जैसी घटनाओं में भी वृद्धि की चिंता जताई गई। उन्होंने कहा कि नशे की लत के कारण कई परिवारों की संपत्ति बिक गई और बच्चों की पढ़ाई तथा बेटियों के विवाह तक प्रभावित हुए हैं। कॉलेजों के आसपास, चाय की दुकानों, रेस्टोरेंट और अन्य स्थानों पर नशे के प्रसार को रोकने के लिए समाज और प्रशासन को मिलकर काम करने की जरूरत है। कार्यक्रम के समापन पर चंद्रा शिक्षण सेवा संस्थान की शिक्षिका संजना ने उपस्थित लोगों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। लोगों ने किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों से दूर रहने, परिवार और परिचितों को नशे से बचाने तथा स्वस्थ और नशामुक्त समाज के निर्माण में योगदान देने का संकल्प लिया। प्रदीप सिसोदिया के आह्वान पर लोगों ने अपने घरों और प्रतिष्ठानों पर 'हमें गर्व है कि मेरा परिवार नशामुक्त है' का स्टीकर लगाने का भी संकल्प लिया। कार्यक्रम में 'नशा छोड़ें, जीवन जोड़ें' का संदेश प्रमुखता से दिया गया।

कार्यक्रम में रमा शंकर यादव, संजय कुमार सिंह, देवेंद्र सिंह, राम जियावन सिंह, लक्की सिंह, मो. सलमान, मो. हसन, चंद्र भूषण सिंह, प्रसिद्ध पाल, अनिल चौहान, सीताराम, अब्दुल मुरुद, हीरा लाल मौर्य, शम्सुद्दीन, राघवेंद्र प्रताप सिंह, कमालुद्दीन, चंद्रभान त्रिपाठी, मो. आरिफ, हैदर हुसैन, नीरज सिंह, नागेंद्र चौहान, अमन, अनीश, मो. शामी, मो. हजरत अली, शैलेंद्र सिंह, गंगा प्रसाद, विजय कुमार, नसीबुल्लाह, शिवलाल गुप्ता, पवन गुप्ता, चंदन, सूरज, विक्रम, अमित चौहान, चंदन मौर्य, रमेश चंद्र, दिनेश यादव, परशुराम, शुभम सिंह, रवि, कमाल, रामजीत, शमसुल हक, मो. हनीफ, गौतम, आयुष तिवारी, सिंपू सिंह, बोला प्रसाद, राम लखन, अनीता, रोहनी, सपना, नेहा कुमारी, संगीता, शुभवती, सुमन, पवन, अभिषेक, धनंजय सिंह, रामशरण, देवेंद्र सिंह, अब्दुल्ला, चंद्रमणि त्रिपाठी, इकराम, राजिम, फैयाज और कृपाशंकर त्रिपाठी सहित दर्जनों लोगों ने अपने विचार रखे। सभी वक्ताओं ने समाज में बढ़ते नशे को गंभीर चिंता का विषय बताते हुए अभियान की सराहना की। उन्होंने प्रदीप सिसोदिया को अभियान में हरसंभव सहयोग देने और इसे लगातार जारी रखने का भरोसा दिलाया।

## पीपलकोटी टनल हादसा: लापता श्रमिकों की तलाश में रेस्क्यू अभियान तेज करने के निर्देश

वेलकम इंडिया संवाददाता

**देहरादून।** पीपलकोटी में टीएचडीसी की निर्माणाधीन टनल में हुए हादसे को लेकर आयुक्त गढ़वाल मंडल आनन्द स्वरूप ने जिला सभागार गोपेश्वर में समीक्षा बैठक की। बैठक में रेस्क्यू अभियान की प्रगति, उपलब्ध संसाधनों, विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय और श्रमिकों से जुड़े विषयों की विस्तार से समीक्षा की गई। अधिकारियों ने बताया कि हादसे में कुल 22 श्रमिक प्रभावित हुए हैं। इनमें से 12 श्रमिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। सात श्रमिक जिला अस्पताल गोपेश्वर में उपचाराधीन हैं, जबकि एक श्रमिक का उपचार एम्स ऋषिकेश में चल रहा है। हादसे में आठ श्रमिकों की मृत्यु हो चुकी है, जबकि दो श्रमिक अभी भी लापता हैं। उनकी तलाश के लिए रेस्क्यू अभियान लगातार जारी है। आयुक्त आनन्द स्वरूप ने निर्देश दिए कि टनल में लापता श्रमिकों की तलाश और बचाव कार्य पूरी गंभीरता और तेजी के साथ जारी रखा जाए। उन्होंने रेस्क्यू अभियान में लगी सभी एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने तथा उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने पर जोर दिया।

बैठक में बताया गया कि रेस्क्यू अभियान के दौरान टनल से तीन मशीनें हटाई जा चुकी हैं। एक एक्सकेवेटर और एक डम्पर को हटाने का कार्य अभी जारी है। आयुक्त ने शेष मशीनरी को जल्द हटाकर टनल के भीतर खोज एवं बचाव कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने आरबीएनएल के साथ प्रभावी समन्वय स्थापित कर टीएचडीसी से संबंधित रेस्क्यू और अन्य आवश्यक कार्यों में सहयोग सुनिश्चित करने को कहा। आयुक्त ने स्पष्ट किया कि सभी संबंधित एजेंसियां आपसी समन्वय के साथ काम करते हुए रेस्क्यू अभियान को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। बैठक में श्रमिकों के हितों से जुड़े मामलों की भी समीक्षा की गई।

## 15 अगस्त को धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

वेलकम इंडिया संवाददाता

**मथुरा/गोवर्धन।** क्षेत्र के आदर्श शिक्षा निकेतन गर्ल्स इंटर कॉलेज में भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रबंधक दान बिहारी शर्मा द्वारा ध्वजारोहण करके तिरंगे को सलामी दी गई, इसके उपरांत सभी ने श्री राम सभागार में अपना-अपना स्थान ग्रहण किया और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला शुरू हुई। इस अवसर पर छात्रझ छात्राओं ने रंगारंग प्रस्तुतियां देकर समा बांध दिया और दर्शकों का मन मोह लिया। नन्हे छात्रों द्वारा पेड़ों के संरक्षण पर एक नाटक की प्रस्तुत दी, वहीं चौथी कक्षा के छात्र-छात्राओं द्वारा मेरा गधा गधो का लीडर गाने पर प्रस्तुति दी गई जिस पर दर्शकों ने हंसते हंसते पेट पकड़ लिया। कार्यक्रम में छात्रा बिशाखा द्वारा बंगाली नृत्य प्रस्तुत किया गया इसके उपरांत छात्रा अंबिका, दिव्यांशी राधाविनोदिनी, छवि एवं एकता द्वारा भाषण दिया गया। सभी ने एक जिम्मेदार नागरिक बनने की लोगों से अपील की एवं अपने देश

को शिखर तक पहुंचाने के लिए शपथ दिलवाई। कार्यक्रम के अंत में पिछले सत्र में वार्षिक परीक्षा में अव्वल आने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया जिसमें कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षाओं की टॉपर कीर्ति एवं कक्षा 10 की बोर्ड का परीक्षाओं की टॉपर विशाखा दास अग्रणी रही। कार्यक्रम की समाप्ति पर छात्र-छात्राओं को प्रधानाचार्य श्रीमती पूर्णिमा कौशिक द्वारा सभी को एक अच्छे भारतीय दिए बनने की सलाह दी। इस अवसर पर विद्यालय के उप प्रबंधक वन बिहारी भारद्वाज, अभिभावक गण एवं विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। बच्चों ने कार्यक्रम के उपरांत मिठाई खाकर राष्ट्रीय पर्व का आनंद लिया।

## अडींग चौकी पुलिस के सराहनीय कार्यों को मिला सम्मान, गब्बर सैनी ने तिरंगा दुपट्टा पहनाकर पुलिसकर्मियों को किया सम्मानित

वेलकम इंडिया संवाददाता

**मथुरा/गोवर्धन।** थाना गोवर्धन क्षेत्र की अडींग चौकी पुलिस द्वारा क्षेत्र में किए जा रहे सराहनीय कार्यों और बेहतर पुलिसिंग को देखते हुए सोमवार को 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समाजसेवी गुलाब सिंह उर्फ गब्बर सैनी ने चौकी प्रभारी प्रदीप भदौरिया सहित समस्त पुलिस टीम का स्वागत एवं सम्मान किया। सम्मान समारोह के दौरान समाजसेवी गुलाब सिंह उर्फ गब्बर सैनी ने चौकी प्रभारी प्रदीप भदौरिया, हेड कांस्टेबल मानवेन्द्र सिंह, विजय कुमार, सत्येंद्र कुमार, कांस्टेबल अमित कुमार, राम सुंदर, वीरेंद्र यादव, देवेंद्र सिंह सहित अन्य पुलिसकर्मियों को तिरंगा दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया। साथ ही देश की महान विभूतियों के स्मृति चिन्ह भेंट कर पुलिसकर्मियों का उत्साहवर्धन किया गया। इस अवसर पर गब्बर सैनी ने कहा कि पुलिसकर्मी दिन-रात अपनी ड्यूटी निभाते हुए समाज की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अडींग चौकी पुलिस द्वारा क्षेत्र में शांति व्यवस्था कायम रखने तथा आमजन की सुरक्षा के लिए किए जा रहे कार्य सराहनीय हैं। ऐसे सम्मान से पुलिसकर्मियों का मनोबल बढ़ता है और उन्हें और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। समारोह के दौरान पुलिसकर्मियों ने समाजसेवी गुलाब सिंह उर्फ गब्बर सैनी का आभार व्यक्त किया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हुए इस सम्मान समारोह ने पुलिस और आमजन के बीच बेहतर संबंधों एवं आपसी सहयोग का संदेश दिया।

## पत्रकार हितों की रक्षा के लिए एकजुट हुआ जर्नलिस्ट प्रेस क्लब, पदाधिकारियों को सौंपी गई जिम्मेदारी

### उत्पीड़न और फर्जी मुकदमों के खिलाफ आंदोलन का ऐलान, कांटे चौकी प्रकरण को लेकर एसपी को सौंपेंगे ज्ञापन

वेलकम इंडिया संवाददाता

**संतकबीरनगर।** पत्रकारों के सम्मान, सुरक्षा, अधिकारों और हितों की रक्षा को लेकर रविवार को खलीलाबाद के एक निजी होटल में जर्नलिस्ट प्रेस क्लब के बैनर तले पत्रकारों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे वरिष्ठ एवं युवा पत्रकारों ने पत्रकारों के साथ हो रहे कथित उत्पीड़न, अभद्रता, मारपीट और फर्जी मुकदमों को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। पत्रकारों ने एकजुट होकर स्पष्ट किया कि अब किसी भी पत्रकार के साथ अन्याय हुआ तो संगठन मजबूती से उसके साथ खड़ा होगा। बैठक में संगठन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से जर्नलिस्ट प्रेस क्लब की जिला एवं तहसील इकाइयों में पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। शैलेंद्र मणि त्रिपाठी को संयोजक और बाबुल श्रीवास्तव को जिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। वहीं वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर सदरे आलम खान और जितेंद्र पाठक को जिम्मेदारी सौंपी गई। इसी क्रम में रितेश उपाध्याय, विजय गुप्ता और हरिओम चौधरी को उपाध्यक्ष, मिथिलेश कुमार धुरिया को महामंत्री, विजय मिश्रा को संगठन सचिव तथा केदारनाथ दुबे को संयुक्त सचिव बनाया गया। अंशु सिंह को सचिव, कल्याण भट्ट को प्रवक्ता, कौशल किशोर को जिला उप सचिव की जिम्मेदारी दी गई।

संगठन में नवनीत श्रीवास्तव और संजय श्रीवास्तव को सचिव, विपिन राय को कोषाध्यक्ष, राजेश्वर को मीडिया प्रभारी तथा सतीश पांडे को संगठन ऑडिटर की जिम्मेदारी सौंपी गई। तहसील स्तर पर भी संगठन को विस्तार देते हुए मेहदावल तहसील अध्यक्ष की जिम्मेदारी सुनील श्रीवास्तव, खलीलाबाद तहसील

अध्यक्ष मोहन राजभर, खलीलाबाद तहसील उपाध्यक्ष अनिल मौर्य तथा तहसील महासचिव गणेश चौरसिया को बनाया गया।

बैठक में पत्रकारों ने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में समाज की समस्याओं को सामने लाने का कार्य करते हैं। ऐसे में पत्रकारों के साथ अमानवीय व्यवहार, दबाव, धमकी, मारपीट या कथित फर्जी मुकदमे लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। पत्रकारों ने कहा कि शासन स्तर से पत्रकारों की सुरक्षा और सम्मान को लेकर स्पष्ट निर्देश होने के बावजूद यदि जिले में किसी पत्रकार का उत्पीड़न होता है तो इसे चुपचाप स्वीकार नहीं किया जाएगा। जर्नलिस्ट प्रेस क्लब पत्रकार हितों के लिए लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीके से अपनी आवाज बुलंद करेगा। बैठक में कोतवाली क्षेत्र के कांटे स्थित चौकी के पास पत्रकार के साथ कथित मारपीट तथा बाद में कोतवाली में पत्रकार के साथ कथित अभद्रता का मामला भी प्रमुखता से उठाया गया। पत्रकारों ने इस मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। निर्णय लिया गया कि जर्नलिस्ट प्रेस क्लब के नेतृत्व में पत्रकारों का प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपेगा। मामले की निष्पक्ष जांच की मांग के साथ ही दोषी पाए जाने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर जिलाधिकारी को भी पत्र सौंपा जाएगा। जर्नलिस्ट प्रेस क्लब के जिला अध्यक्ष बाबुल श्रीवास्तव ने कहा कि पत्रकार अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी संगठन से जुड़े रहें, लेकिन संतकबीरनगर जिले में जब भी किसी पत्रकार के साथ उत्पीड़न या अन्याय होगा, जर्नलिस्ट प्रेस क्लब उसके साथ मजबूती से खड़ा रहेगा। उन्होंने कहा कि पत्रकारों के हक और अधिकारों की लड़ाई अब संगठित तरीके से लड़ी जाएगी। किसी भी पत्रकार के सम्मान के साथ समझौता नहीं किया जाएगा और आवश्यकता पड़ने पर आंदोलन का रास्ता भी अपनाया जाएगा।

बैठक में जिले के वरिष्ठ पत्रकार जी.एल. वेदांती और गुलाम अली के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। उपस्थित पत्रकारों ने दोनों दिवंगत पत्रकारों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। जर्नलिस्ट प्रेस क्लब ने दोनों दिवंगत पत्रकारों के परिजनों को संगठन की ओर से आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने का भी निर्णय लिया। संगठन ने कहा कि पत्रकारिता जगत के किसी साथी के परिवार को संकट की घड़ी में अकेला नहीं छोड़ा जाएगा।

## माहिरा सिद्दीकी ने कम उम्र में मुकम्मल किया कुरआन शरीफ, बधाइयों का तांता

वेलकम इंडिया संवाददाता

**संतकबीरनगर।** सेमरियावां स्थित लाइफ लाइन हॉस्पिटल एंड अल्ट्रासाउंड सेंटर के प्रबंध निदेशक डॉ. शाहरुख अहमद सिद्दीकी की पुत्री माहिरा सिद्दीकी ने कम उम्र में कुरआन शरीफ मुकम्मल कर महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। माहिरा की इस उपलब्धि पर परिवार और शुभचिंतकों में खुशी का माहौल है। माहिरा सिद्दीकी की मां तरन्नुम सिद्दीकी भी चिकित्सक हैं। परिजनों के अनुसार माहिरा ने मेहनत और लगन के साथ कुरआन शरीफ की तिलावत पूरी की। इस उपलब्धि को परिवार के लिए खुशी और गर्व का अवसर बताया गया है। माहिरा सिद्दीकी के कुरआन शरीफ मुकम्मल करने पर क्षेत्र के लोगों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पूर्व प्रमुख मशहूर आलम चौधरी, जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सैयद तारिक हुसैन, जिला सचिव अतीक सिद्दीकी, सोशल मीडिया विभाग के जिलाध्यक्ष मुहम्मद परवेज अख्तर, अखलाक अहमद चौधरी, मोहम्मद सलमान, अख्तर हुसैन, अतहरूल बारी, मुहम्मद अफजल, मुहम्मद अकरम नजीर, अबुल कलाम, महेश कुमार, मुहम्मद तैयब, मोहम्मद तव्वाब, अतीकुर्रहमान, मौलाना सेराज अहमद, रियाज अहमद सहित अन्य लोगों ने बधाई देते हुए खुशी का इजहार किया। लोगों ने कहा कि कम उम्र में कुरआन शरीफ मुकम्मल करना माहिरा की मेहनत, लगन और धार्मिक शिक्षा के प्रति समर्पण को दशार्ता है। उन्होंने माहिरा के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए परिवार को भी इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं दीं।

# जिलाधिकारी ने सर्वोदय विद्यालय का किया निरीक्षण, विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं देने के दिये निर्देश

वेलकम इंडिया पीलीभीत

**पीलीभीत।** जिलाधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह ने सोमवार को कलीनगर तहसील क्षेत्र के माधोटांडा स्थित समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय का निरीक्षण किया।इस दौरान उन्होंने विद्यालय और छात्रावास में विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, साफ-सफाई, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को बच्चों के लिए बेहतर और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान छात्रावास के शौचालयों की व्यवस्था संतोषजनक नहीं मिली। इस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताते हुए संबंधित अधिकारियों को तत्काल साफ-सफाई कराने के साथ ही आवश्यक मरम्मत कार्य कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विद्यालय और छात्रावास में रहने वाले बच्चों को स्वच्छ, सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण उपलब्ध कराना अधिकारियों की प्राथमिकता होनी चाहिए। व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिलाधिकारी ने विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को लेकर भी विशेष निर्देश दिए। उन्होंने बच्चों की आंखों की जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से विशेष स्वास्थ्य शिविर आयोजित कराने को कहा। शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए विद्यालय में स्मार्ट क्लास की सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए, ताकि विद्यार्थियों को डिजिटल माध्यम से पढ़ाई का बेहतर अवसर मिल सके। उन्होंने विद्यालय में सोलर सिस्टम स्थापित कराने के साथ ही विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के लिए फुटबॉल, वॉलीबॉल और क्रिकेट की किट उपलब्ध कराने को कहा। इसके अलावा मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए बड़ा टीवी सेट तथा नियमित व्यायाम के लिए ओपन जिम स्थापित कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि विद्यालय की सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समयबद्ध तरीके से पूरी की जाएं। विद्यार्थियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर करते हुए उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्साधिकारी, एसडीएम कलीनगर, जिला विकास अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, बीएसए, डीसी मनरेगा, प्रधानाध्यापक सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

# राष्ट्रीय बजरंग दल ने निकाली भव्य बाइक कांवड़ यात्रा, शारदा के जल से महादेव का करेगा जलाभिषेक

वेलकम इंडिया संवाददाता

**पूरनपुर/पीलीभीत।** सावन माह के पावन अवसर पर सोमवार को राष्ट्रीय बजरंग दल की ओर से भव्य बाइक कांवड़ यात्रा निकाली गई। दोपहर करीब 12 बजे गौ रक्षा दल के प्रमुख शिवम भदौरिया के आवास से यात्रा का शुभारंभ हुआ। बड़ी संख्या में श्रद्धालु और कांवड़िये बाइक लेकर यात्रा में शामिल हुए। धार्मिक जयकारों के बीच निकली कांवड़ यात्रा से नगर का वातावरण भक्तिमय हो गया।बाइक कांवड़ यात्रा स्टेशन रोड से होते हुए शेरपुर कला पहुंची और इसके बाद धनाराघाट स्थित शारदा नदी के लिए रवाना हुई। यात्रा में शामिल कांवड़िये धनाराघाट पहुंचकर विधि- विधान से शारदा नदी से पवित्र जल लेकर वापस लौटेंगे। इसके बाद पूरनपुर-बंडा मार्ग स्थित मंदिर में भगवान शिव का जलाभिषेक किया जाएगा। यात्रा के दौरान श्रद्धालु पूरे उत्साह के साथ धार्मिक जयकारे लगाते हुए आगे बढ़ते रहे। जगह-जगह लोगों ने कांवड़ियों का उत्साहवर्धन किया। बाइक कांवड़ यात्रा को लेकर आयोजकों और कार्यकताओं में खासा उत्साह दिखाई दिया। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस प्रशासन भी पूरी तरह सतर्क रहा। कोतवाल पवन पांडेय पुलिस बल के साथ यात्रा के दौरान मौजूद रहे और मार्ग पर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते रहे। पुलिस की मौजूदगी में कांवड़ यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से आगे बढ़ी। राष्ट्रीय बजरंग दल के गौरक्षा प्रमुख शिवम भदौरिया ने बताया कि यात्रा का उद्देश्य श्रद्धालुओं को सुरक्षित तरीके से शारदा नदी से जल लेकर मंदिर तक पहुंचाना और भगवान शिव का जलाभिषेक करना है। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा को लेकर कार्यकताओं में विशेष उत्साह है और यात्रा के दौरान सुरक्षा एवं अनुशासन का पूरा ध्यान रखा जा रहा है।यात्रा में बड़ी संख्या में राष्ट्रीय बजरंग दल के कार्यकर्ता, गौ रक्षा दल के पदाधिकारी और श्रद्धालु शामिल रहे। पुलिस प्रशासन की निगरानी के बीच यात्रा धनाराघाट की ओर रवाना हुई।

# गोमती उद्गम स्थल पर डीएम ने कांवड़ियों पर बरसाए फूल, फल वितरित कर दीं शुभकामनाएं

**कलीनगर/पीलीभीत (वेलकम इंडिया)।** मां गोमती के उद्गम स्थल पर सोमवार को जिलाधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह ने कांवड़ियों का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। उन्होंने कांवड़ियों को फल वितरित किए और उनकी मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं दीं। डीएम के इस स्वागत से कांवड़ियों में उत्साह नजर आया। डीएम ने मां गोमती मंदिर में विधिवत दर्शन-पूजन कर जनपद में सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की। इसके बाद उन्होंने मंदिर परिसर में मौजूद श्रद्धालुओं एवं आमजन से संवाद कर उनकी समस्याओं और व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। इस दौरान जनपद स्तरीय अधिकारियों ने मंदिर परिसर में लोगों को अपने-अपने विभागों की ओर से संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। अधिकारियों ने पात्र लाभार्थियों को सरकारी योजनाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया, पात्रता और उपलब्ध सुविधाओं के बारे में भी बताया। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार कर अधिक से अधिक पात्र लोगों तक उनकी जानकारी पहुंचाई जाए। साथ ही पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ दिलाने में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। इस अवसर पर संबंधित जनपद स्तरीय अधिकारी, श्रद्धालु और बड़ी संख्या में कांवड़िये मौजूद रहे।

# अलग अलग सड़क हादसे में महिला समेत चार घायल, तीन की हालत गंभीर, तीनों घायल जिला अस्पताल अयोध्या रेफर

वेलकम इंडिया/फतेह खान

**रुदौली-अयोध्या।** रुदौली सर्किल क्षेत्र के अंतर्गत लखनऊ अयोध्या मार्ग के रौजागांव ओवरब्रिज पर शनिवार को एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार ओवरब्रिज (पुल) के नीचे जा गिरा। जिसके चलते वह गंभीर रूप से घायल हो गए। रास्ते से गुजर रहे राहगीरों ने उसे ओवरब्रिज से नीचे गिरते देख तुरन्त दौड़ पड़े। और इस घटना की सूचना तुरन्त कोतवाली रुदौली पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने राहगीरों की मदद से गंभीर रूप से घायल युवक को आनन फानन में इलाज के लिए सीएचसी खैरनपुर रुदौली में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने हालत गंभीर देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जबकि अज्ञात वाहन टक्कर मारने के बाद मौके से फरार हो गया। जानकारी के अनुसार कोतवाली रूदौली क्षेत्र के अंतर्गत हलीमनगर गांव निवासी अरसलान पुत्र अंसार खान जो अपनी बाइक से घर से किसी कार्य के लिए निकला था। तभी रौजागांव ओवरब्रिज पर पहुंच ही रहा था कि अचानक एक अज्ञात वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार ओवरब्रिज (पुल) के नीचे जा गिरा। जिसमें बाइक सवार अरसलान गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची रुदौली कोतवाली पुलिस ने घायल युवक को इलाज के लिए सीएचसी खैरनपुर रुदौली में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने हालत गंभीर देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दूसरी घटना बलरामपुर रौजागांव चीनी मिल के पास एक बाइक सवार मोहम्मद सईद उम्र (65) वर्ष को भी एक अज्ञात वाहन ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। ग्रामीणों द्वारा इस घटना की सूचना तुरन्त पटरंगा थाना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पटरंगा पुलिस ने गंभीर रूप से घायल को आनन फानन में इलाज के सीएचसी खैरनपुर रुदौली पहुंचाया। जहां पर हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वही तीसरी घटना इसी पटरंगा थाना क्षेत्र अंतर्गत लखनऊ अयोध्या मार्ग पर ग्राम गनौली पेट्रोल पंप के पास घटी, जहां राजमार्ग के किनारे टायर पंचर खड़ी टाटा मैजिक में बाइक सवार की जोरदार टक्कर हो गई। इस घटना में गौस मोहम्मद व आफरीन गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें भी पटरंगा पुलिस ने स्थानीय ग्रामीणों की मदद से इलाज के लिए सीएचसी खैरनपुर रुदौली में भर्ती कराया। जहां पर गौस मोहम्मद की हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जबकि आफरीन का सीएचसी रुदौली पर ही डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चल रहा है।

# पोखरे में टिन की नाव पलटने से किशोर की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

खेसरहा/सिद्धार्थनगर (वेलकम इंडिया)। खेसरहा थाना क्षेत्र के अकोल्ही गांव में सोमवार दोपहर पोखरे में टिन की नाव चलाते समय डूबने से करीब 15 वर्षीय किशोर की मौत हो गई। हादसे के बाद परिवार में कोहराम मच गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू की। मिली जानकारी के अनुसार, आमिर खान पुत्र माहिर हुसैन, निवासी ग्राम अकोल्ही, सोमवार दोपहर करीब दो बजे गांव के उत्तर दिशा में स्थित ईंट-भट्ठे के पास पोखरे में टिन की नाव चला रहा था। इसी दौरान अचानक नाव असंतुलित होकर पलट गई और आमिर गहरे पानी में डूब गया।आसपास मौजूद लोगों ने उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन उसकी जान नहीं बचाई जा सकी। घटना की सूचना मिलते ही खेसरहा थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा की कार्रवाई शुरू कर दी। मौके पर बांसी तहसीलदार के पहुंचने की भी जानकारी है। पुलिस आगे की विधिक कार्रवाई में जुटी है। किशोर की मौत की खबर मिलते ही गांव में मातम छा गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। घटना के बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जुट गए।

# श्रावण सोमवार पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम, धनाराघाट में एएसपी ने किया निरीक्षण

वेलकम इंडिया संवाददाता

**पीलीभीत।** श्रावण मास के तृतीय सोमवार और कांवड़ यात्रा के दृष्टिगत पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सतर्कता बढ़ा दी है। पुलिस अधीक्षक पीलीभीत के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक ने सोमवार को थाना हजारा क्षेत्र के धनाराघाट पहुंचकर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों और कांवड़ मार्ग का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मौके पर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए संबंधित पुलिस अधिकारियों से आवश्यक जानकारी ली। अपर पुलिस अधीक्षक ने धनाराघाट क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति, आवागमन के साधनों, कांवड़ियों के आवागमन वाले मार्ग तथा सुरक्षा व्यवस्था का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से बाढ़ प्रभावित स्थानों की स्थिति और श्रद्धालुओं की आवाजाही के संबंध में जानकारी प्राप्त की। साथ ही कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक ने ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों को पूरी सतर्कता और जिम्मेदारी के साथ ड्यूटी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा जाए और संवेदनशील स्थानों पर लगातार निगरानी की जाए। कांवड़ियों और श्रद्धालुओं के साथ विनम्र एवं संवेदनशील व्यवहार करने पर भी विशेष जोर दिया गया।उन्होंने निर्देशित किया कि किसी भी प्रकार की आपात स्थिति सामने आने पर पुलिसकर्मी तत्काल प्रभावी कार्रवाई करें और संबंधित अधिकारियों को सूचना दें। कांवड़ यात्रा के दौरान मार्ग पर यातायात व्यवस्था बनाए रखने तथा श्रद्धालुओं के सुरक्षित आवागमन को प्राथमिकता देने के निर्देश भी दिए गए।

# देवहा नदी का नाला पार कर रहे किसान पर मगरमच्छ का हमला, ग्रामीणों ने बचाई जान

वेलकम इंडिया संवाददाता

**अमरिया/पीलीभीत।** तहसील क्षेत्र के नगरिया कॉलोनी के पास देवहा नदी का नाला पार करते समय एक किसान पर मगरमच्छ ने हमला कर दिया। मगरमच्छ ने किसान के एक पैर को अपने जबड़े में दबा लिया और उसे नदी की ओर खींचने का प्रयास करने लगा। किसान की चीख-पुकार सुनकर आसपास खेतों में काम कर रहे ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। ग्रामीणों ने शोर मचाकर मगरमच्छ को डराया, जिसके बाद वह किसान को छोड़कर नाले में चला गया। इस घटना से मौके पर काफी देर तक अफरा-तफरी का माहौल बना रहा।बताया गया कि नगरिया कॉलोनी क्षेत्र निवासी किसान प्रदीप मदक सोमवार को देवहा नदी के नाले की ओर से गुजर रहे थे। इसी दौरान पानी में छिपे मगरमच्छ ने अचानक उन पर हमला कर दिया। किसान को संभलने का मौका तक नहीं मिला और मगरमच्छ ने उनका एक पैर जबड़े में जकड़ लिया। इसके बाद मगरमच्छ उन्हें खींचकर पानी की ओर ले जाने लगा। किसान ने बचाव के लिए शोर मचाना शुरू कर दिया।किसान की आवाज सुनकर आसपास खेतों में काम कर रहे ग्रामीण दौड़कर मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने एकजुट होकर शोर मचाया और मगरमच्छ को भगाने का प्रयास किया। ग्रामीणों की भीड़ और शोर से मगरमच्छ ने किसान को छोड़ दिया और नाले के पानी में चला गया। इसके बाद ग्रामीणों ने घायल किसान को बाहर निकाला और परिजनों को सूचना दी। परिजन घायल प्रदीप मदक को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार किया, लेकिन पैर में गंभीर चोट होने के कारण किसान की हालत गंभीर बताई गई। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हें बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची।

# महारानी अवंती बाई लोधी सम्मेलन में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिले धनपति वर्मा व विनोद वर्मा

वेलकम इंडिया संवाददाता

**पीलीभीत।** महारानी अवंती बाई लोधी की जयंती के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से धनपति वर्मा एडवोकेट और विनोद वर्मा विधानसभा अध्यक्ष ने मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने अखिलेश यादव को महारानी अवंती बाई लोधी का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकताओं की मौजूदगी रही।सम्मेलन के दौरान धनपति वर्मा एडवोकेट और विनोद वर्मा ने अखिलेश यादव से मुलाकात कर सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर चर्चा की। उन्होंने महारानी अवंती बाई लोधी के साहस, संघर्ष और देश के लिए दिए गए योगदान को याद करते हुए उनके आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता पर जोर दिया। अखिलेश यादव को महारानी अवंती बाई लोधी का स्मृति-चिह्न भेंट किए जाने के दौरान कार्यकताओं में खासा उत्साह दिखाई दिया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि महारानी अवंती बाई लोधी भारतीय इतिहास में वीरता, स्वाभिमान और संघर्ष की प्रतीक हैं। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अदम्य साहस के साथ संघर्ष किया और देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनके जीवन से समाज को एकजुटता, साहस और देशहित में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।सम्मेलन में मौजूद कार्यकताओं ने महारानी अवंती बाई लोधी के विचारों और संघर्ष को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान समाजवादी पार्टी

# जिलाधिकारी ने समस्याएं सुनकर फरियादियों की समस्याओं का किया निराकरण

वेलकम इंडिया/गोविन्द मेहता

**बागेश्वर।** जिलाधिकारी अपूर्वा पाण्डे की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित किया गया।जनसुनवाई के दौरान कुल पांच शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें मुख्य रूप से पेयजल, सड़क, विद्युत आदि से संबंधित समस्याएं शामिल रहीं। जिलाधिकारी ने प्राप्त शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को अधिकांश प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण करने के निर्देश दिए और अन्य शिकायतों को संबंधित विभाग को शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देशित किया गया।जनसुनवाई में बैड़ा मझेड़ा-जारती मोटर मार्ग के किमी 11 में सड़क धंसने से आवागमन के लिए खतरा उत्पन्न होने की शिकायत पर जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी को जांच समिति गठित कर एक माह के भीतर आख्या प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। वही कभड़ा गांव के ग्रामीणों का शिष्टमंडल सड़क निर्माण की मांग को लेकर जनता दरबार मे पहुंचे। जहाँ ग्रामीणों ने गांव के लिए सड़क नही बन पाने, पूर्व में सर्वे होने के बाद विभाग द्वारा जल्द गाड़ भटखोला, बमौरखान,से घटगाड के लिए सड़क बनाने का आश्वासन देने के बाद भी अब तक सड़क कटान का कार्य शुरू नही होने पर नाराजगी जताई और जिलाधिकारी से जल्द लोनीवि से गांव को सड़क से जोड़ने हेतु निर्माण कार्य शुरू कराए जाने की गुहार लगाई। जिस पर जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को सड़क निर्माण कराने हेतु लोनीवि अभियंता से जल्द सीमांकन कार्य शुरू कर सड़क निर्माण कार्य को स्वीकृति दिलाने हेतु डीपीआर शासन को भेजने के निर्देश दिए।इस दौरान जिलाधिकारी ने पूर्व में प्राप्त एवं लंबित प्रकरणों की भी बारीकी से समीक्षा की। उन्होंने लंबे समय से लंबित मामलों में संबंधित विभागों से जवाब-तलब करते हुए प्रत्येक प्रकरण पर की गई कार्रवाई की स्पष्ट आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए और शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जाए। जनसुनवाई के दौरान सीएम हेल्पलाइन की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीएम हेल्पलाइन पर प्राप्त शिकायतों के संबंध में निर्धारित कॉलिंग प्रक्रिया का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए तथा कॉलिंग प्रतिशत किसी भी स्थिति में 70 प्रतिशत से कम न हो। उन्होंने अधिकारियों को शिकायतों के निस्तारण के साथ-साथ शिकायतकर्ता से प्रभावी संवाद बनाए रखने के निर्देश भी दिए। इसके अतिरिक्त 'हेलो बागेश्वर' के माध्यम से प्राप्त समस्याओं की भी विस्तृत समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण तथा प्राप्त शिकायतों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में मुख्य विकास अधिकारी नरेश कुमार सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

# शिक्षकों की एकजुटता से ही समस्याओं का होगा समाधान: सतीश कुमार

वेलकम इंडिया पीलीभीत

**पूरनपुर/पीलीभीत।** नगर के गांधी पार्क में संयुक्त शिक्षक संघ की ब्लॉक स्तरीय बैठक जिलाध्यक्ष सतीश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से मंथन किया गया। साथ ही संगठन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से ब्लॉक की नई कार्यकारिणी का गठन कर पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सतीश कुमार ने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठन की एकजुटता सबसे बड़ी ताकत है। जब शिक्षक एक मंच पर मजबूती के साथ अपनी आवाज उठाएंगे, तभी उनकी लंबित समस्याओं का प्रभावी समाधान संभव होगा। उन्होंने शिक्षकों से संगठन के साथ मजबूती से जुड़कर समय-समय पर होने वाले संघर्षों में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से संयुक्त शिक्षक संघ ब्लॉक पूरनपुर की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें इंतजार अहमद को ब्लॉक संरक्षक, रावेन्द्र प्रसाद को ब्लॉक अध्यक्ष, द्विज कमलनाथ त्रिपाठी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, धर्मेंद्र कुमार कुशवाहा को उपाध्यक्ष, प्रभुदयाल को ब्लॉक महामंत्री, लक्ष्मीनारायण को कोषाध्यक्ष, विमलेश कुमार राठौर को संगठन मंत्री, अविनाश सिंह को सचिव तथा ओमप्रकाश कुशवाहा को मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी गई।नई कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का शिक्षकों ने स्वागत करते हुए संगठन को और अधिक मजबूत बनाने का संकल्प लिया। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने एक स्वर में कहा कि शिक्षकों की पुरानी पेंशन समेत अन्य लंबित समस्याओं के समाधान के लिए संगठन पूरी मजबूती से संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि शिक्षकों के हितों से जुड़े मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर उठाया जाएगा और किसी भी समस्या के समाधान के लिए सभी शिक्षक एकजुट होकर आवाज बुलंद करेंगे।बैठक में संगठन की आगामी रणनीति और शिक्षकों की समस्याओं को लेकर भी चर्चा की गई। पदाधिकारियों ने कहा कि संगठन का उद्देश्य शिक्षकों के हितों की रक्षा करते हुए उनकी समस्याओं को उचित मंच तक पहुंचाना है। बैठक में मौजूद शिक्षकों ने नई कार्यकारिणी पर विश्वास जताते हुए हर संघर्ष में सहयोग देने का भरोसा दिलाया।

# निर्माण में देरी पर कार्यदायी संस्था को सीडीओ की फटकार, समयसीमा में काम पूरा करने के निर्देश

वेलकम इंडिया संवाददाता

**सिकंदराबाद।** मुख्य विकास अधिकारी निशा ग्रेवाल ने सोमवार को निमार्णाधीन मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय, चंदेरू का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय के निर्माण कार्य की प्रगति, गुणवत्ता और मौके पर चल रहे कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान निर्माण कार्य में अपेक्षित प्रगति नहीं मिलने पर सीडीओ ने नाराजगी जताई और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निर्माण कार्य में विलंब पाए जाने पर सीडीओ ने निर्माण एवं डिजाइन सेवा की कार्यदायी संस्था के अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाते हुए निर्धारित समयसीमा में कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्माण में इस्तेमाल की जा रही सामग्री की गुणवत्ता की भी जांच की तथा कार्य की प्रगति को मानकों के अनुरूप बनाए रखने को कहा। सीडीओ ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि निर्माण कार्य में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। निरीक्षण के दौरान कार्यस्थल पर मजदूरों के बच्चे घूमते हुए पाए गए। इस पर सीडीओ ने मजदूरों तथा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि बच्चों का विद्यालय में दाखिला कराया जाए। उन्होंने कहा कि बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजकर उनकी शिक्षा सुनिश्चित की जाए, ताकि निर्माण कार्य में लगे श्रमिकों के बच्चे भी शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहें। सीडीओ ने निरीक्षण के दौरान सामने आई कमियों को गंभीरता से लेते हुए उनका शीघ्र निस्तारण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्य निर्धारित मानकों एवं गुणवत्ता के अनुरूप समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए, ताकि विद्यालय का निर्माण जल्द पूरा होकर विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से निर्माण कार्य की लगातार निगरानी करने और प्रगति की नियमित समीक्षा करने के भी निर्देश दिए।

## वाराणसी फर्नीचर एवं फर्निशिंग व्यापार मंडल ने धूमधाम से मनाया 80वां स्वतंत्रता दिवस, अध्यक्ष अजय गुप्ता ने किया ध्वजारोहण

वेलकम इंडिया/संतोष कुमार सिंह

**वाराणसी।** भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वाराणसी फर्नीचर एवं फर्निशिंग व्यापार मंडल द्वारा आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में व्यापार मंडल के अध्यक्ष अजय गुप्ता ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। वाराणसी के कोने-कोने से सैकड़ों फर्नीचर एवं फर्निशिंग व्यापारियों ने इस आयोजन में भाग लेकर इसे ऐतिहासिक बना दिया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन व्यापार मंडल के संरक्षकों राजेश अग्रवाल, नरेंद्र गर्ग तथा डॉ. यादवेंद्र सिंह के नेतृत्व में हुआ। महानगर उद्योग व्यापार समिति के वरिष्ठ पदाधिकारी नारायण खेमका, अशोक जायसवाल, रजनीश कनौजिया, राजन जायसवाल एवं सोमनाथ विश्वकर्मा ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और व्यापारियों का उत्साहवर्धन किया।

संगठन के पदाधिकारियों में महामंत्री रमेश यादव, कोषाध्यक्ष दिलीप गुप्ता 'गुड्डू', उपाध्यक्ष अश्विनी कुमार जायसवाल 'सनी' तथा प्रभारी प्रकाश सोनेजा, राजकुमार यादव, उपेंद्र कुमार, तनवीर सिद्दीकी, अमीन खान एवं राजकुमार शामिल रहे।

इस अवसर पर उपस्थित सम्मानित व्यापारियों में ओमप्रकाश, सुभाष, जयप्रकाश जायसवाल, प्रभात गुप्ता, दीपक जायसवाल, प्रहलाद यादव, सतीश पटेल, रितेश पांडेय, हाजी सुग्गन, धनेश विश्वकर्मा, सुनील यादव, आनंद पटेल तथा वाराणसी के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे सैकड़ों सम्मानित व्यापारी बंधु मौजूद रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन महामंत्री रमेश यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष अश्विनी कुमार जायसवाल 'सनी' ने प्रस्तुत किया। अध्यक्ष अजय गुप्ता ने कहा कि सभी के सहयोग और उपस्थिति से यह कार्यक्रम सफल बन सका। समस्त वाराणसी फर्नीचर एवं फर्निशिंग व्यापार मंडल की ओर से सभी को हार्दिक आभार एवं धन्यवाद।

## संदिग्ध परिस्थितियों में युवक ने फांसी का फंदा लगाकर की आत्महत्या

### पुलिस ने पंचनामा भरकर शव परिजनों को सौंपा

वेलकम इंडिया संवाददाता

**अहमदगढ़।** थाना अहमदगढ़ क्षेत्र के गांव रानीवाला में सोमवार को एक युवक ने घर में संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना मिलते ही अहमदगढ़ थाना पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की तैयारी की, लेकिन परिजनों ने कार्रवाई से इनकार कर दिया। इसके बाद पुलिस ने पंचनामा भरकर शव परिजनों को सौंप दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान नीरज पुत्र रवि करण शर्मा के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि मृतक की पत्नी पिछले कुछ महीनों से अपने मायके पंजाब में रह रही थी। मृतक के दो बच्चे हैं। बताया गया कि नीरज अत्यधिक शराब पीने का आदी था। सोमवार को नीरज ने रस्सी का फंदा लगाकर अपने घर में आत्महत्या कर ली। घटना की जानकारी मिलने के बाद आसपास के लोग भी मौके पर एकत्र हो गए। परिजनों में युवक की मौत के बाद कोहराम मच गया और घर में मातम का माहौल हो गया। हालांकि आत्महत्या के वास्तविक कारणों का अभी स्पष्ट पता नहीं चल सका है। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर परिजनों को सौंप दिया है। मृतक की पत्नी एवं परिजनों ने शव का पोस्टमार्टम कराने से इनकार किया है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घटना स्थल का निरीक्षण किया और आसपास के लोगों से भी जानकारी जुटाई। फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस द्वारा घटना से जुड़े तमाम बिंदुओं पर जांच-पड़ताल की जा रही है। पुलिस यह भी पता लगाने का प्रयास कर रही है कि युवक ने यह कदम किन परिस्थितियों में उठाया।

## मनियारी में झंडा उतारने को लेकर विवाद, पुलिस ने कराया शांत

**बुगरासी/खानपुर।** खानपुर क्षेत्र के गांव मनियारी में पानी की टंकी पर लगे डॉ. भीमराव आंबेडकर के झंडे को उतारकर अन्य झंडे लगाए जाने को लेकर विवाद हो गया। देखते ही देखते दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। विवाद की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर शांत कराया।

जानकारी के अनुसार गांव की आंबेडकर बस्ती स्थित पानी की टंकी पर नीला झंडा लगा हुआ था। शनिवार को कुछ लोग वहां पहुंचे और नीला झंडा उतारकर तिरंगा व भगवा झंडा लगा दिया। आरोप है कि पहले से लगा डॉ. आंबेडकर का झंडा उतारकर फाड़ दिया गया। इसकी जानकारी बस्ती के लोगों को हुई तो बड़ी संख्या में महिला-पुरुष मौके पर पहुंच गए और घटना पर नाराजगी जताते हुए विरोध करने लगे। विवाद बढ़ने की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई।

## कौन्दू वृहद गौशाला का सीडीओ ने किया औचक निरीक्षण, जलभराव दूर करने के दिए निर्देश

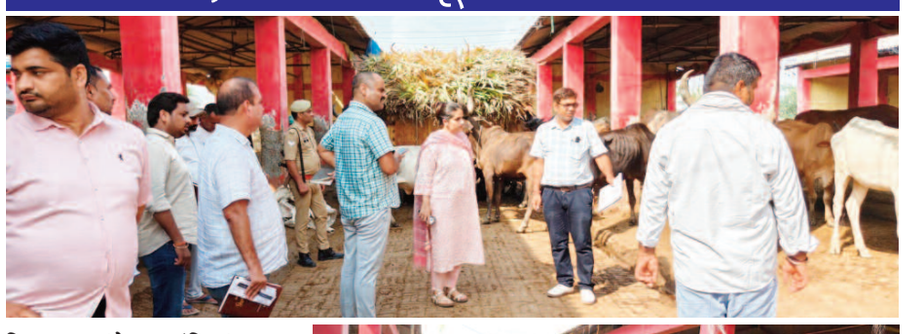

**सिकन्द्राबाद (वेलकम इंडिया)।** मुख्य विकास अधिकारी सुश्री निशा ग्रेवाल ने सोमवार को विकास खंड सिकन्द्राबाद स्थित वृहद गौशाला, कौन्दू का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने गौशाला में पशुओं के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं, साफ-सफाई एवं परिसर की स्थिति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान गौशाला परिसर में जलभराव पाया गया। इस पर मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को गौशाला परिसर को जलभराव से शीघ्र मुक्त कराने के निर्देश दिए। साथ ही शेड्स के मध्य आवागमन के लिए उचित मार्ग तैयार कराने के भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। सीडीओ ने गौशाला की व्यवस्थाओं को व्यवस्थित एवं स्वच्छ बनाए रखने तथा पशुओं की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

## पीआरडी जवानों का सम्मेलन आज, बुलंदशहर में लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए जुड़ेंगे जवान

वेलकम इंडिया संवाददाता

**बुलंदशहर।** महानिदेशक युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल महानिदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के ई-मेल पत्र संख्या-234/पांच-24/पीआरडी/2024 दिनांक 17 अगस्त 2026 के क्रम में जनपद बुलंदशहर में पीआरडी जवानों के सम्मेलन की लाइव स्ट्रीमिंग कराई जाएगी। सम्मेलन में जनपद के पीआरडी जवानों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तर पर आवश्यक तैयारियां पूरी की जा रही हैं। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में 18 अगस्त 2026 को पूर्वाह्न 11 बजे से बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह, रामगढ़ताल, गोरखपुर में पीआरडी जवानों का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन में प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पीआरडी जवानों की सहभागिता सुनिश्चित कराई जाएगी। इसी क्रम में बुलंदशहर के जवान भी विकास भवन स्थित सभागार कक्ष में लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से कार्यक्रम से जुड़ेंगे। सम्मेलन के दौरान मुख्यमंत्री पीआरडी जवानों को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम में जवानों से जुड़े विभिन्न विषयों, उनकी भूमिका और विभागीय गतिविधियों से संबंधित जानकारी भी साझा की जाएगी। जिला स्तर पर आयोजित लाइव स्ट्रीमिंग के लिए विकास भवन के सभागार कक्ष में आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्य विकास अधिकारी, बुलंदशहर के निदेर्शानुसार जनपद में तैनात क्षेत्रीय युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारियों, व्यायाम प्रशिक्षकों तथा जनपद के अंतर्गत आने वाले 16 विकासखंडों के प्रशिक्षित पीआरडी जवानों द्वारा सम्मेलन में बावर्दी प्रतिभाग करना अनिवार्य किया गया है। संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि सभी जवान निर्धारित समय पर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से सम्मेलन में सहभागिता सुनिश्चित करें।

## गोडेश्वर मंदिर में आस्था का उमड़ा सैलाब, सावन के तीसरे सोमवार व नाग पंचमी पर भव्य रुद्राभिषेक और विशाल भंडारे में जुटे हजारों श्रद्धालु

वेलकम इंडिया संवाददाता

**वाराणसी।** वाराणसी विकास प्राधिकरण (वीडीए) परिसर स्थित अति प्राचीन गोडेश्वर मंदिर में सावन माह के पावन तीसरे सोमवार एवं नाग पंचमी के शुभ अवसर पर भव्य रुद्राभिषेक तथा विशाल भंडारे का भव्य आयोजन श्रद्धा एवं उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस धार्मिक अनुष्ठान में हजारों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर बाबा भोलेनाथ का दर्शन-पूजन किया और महाप्रसाद ग्रहण किया। इस पावन अवसर पर वाराणसी विकास प्राधिकरण के सचिव, अपर सचिव, वित्त नियंत्रक सहित वीडीए के समस्त सहायक अभियंता, अवर अभियंता एवं कर्मचारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पूजा-अर्चना कर देश व प्रदेश की समृद्धि की कामना की तथा भक्तिभाव से महाप्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन एवं अध्यक्षता राज किशोर सिंह एवं अनिरुद्ध पांडेय (अध्यक्ष) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। समारोह के सफल संचालन पर आयोजकों ने कहा कि बाबा भोलेनाथ की असीम कृपा से ही यह विशाल आयोजन निर्विघ्न संपन्न हो सका। इस पूरे आयोजन का विशेष श्रेय अनुज भ्राता आयुष द्विवेदी एवं चंदन शुक्ला को जाता है, जिनके अथक प्रयासों और सेवाभाव से यह धार्मिक अनुष्ठान भव्य रूप ले सका।

## मांगों को लेकर भारतीय मजदूर संघ का देशव्यापी विरोध प्रदर्शन, जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

वेलकम इंडिया/संतोष कुमार सिंह

**वाराणसी।** भारतीय मजदूर संघ वाराणसी द्वारा भारतीय मजदूर संघ केंद्र के आह्वान पर राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन के तहत वाराणसी में जोरदार प्रदर्शन किया गया। इस दौरान शास्त्री घाट, वरुणा पुल से जिला मुख्यालय तक विरोध जुलूस निकाला गया। प्रदर्शन के बाद प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री, श्रम मंत्री भारत सरकार एवं मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार के नाम संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी वाराणसी को सौंपा गया। विरोध प्रदर्शन में सैकड़ों की संख्या में संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों के कर्मचारियों ने भाग लिया। कर्मचारियों ने अपनी मांगों के समर्थन में नारेबाजी करते हुए जिला मुख्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व प्रदेश अध्यक्ष विशेश्वर राय ने किया। इस दौरान डॉ. दूधनाथ प्रदेश उपाध्यक्ष, रामकृष्ण गुप्ता संभाग प्रमुख एवं विभाग प्रमुख भारतीय मजदूर संघ, राजीव सिंह जिलाध्यक्ष और विकास केसरी जिलामंत्री सहित विभिन्न पदाधिकारी मौजूद रहे। प्रदर्शन में बीएलडब्ल्यू, यूनियन बैंक, केनरा बैंक, बड़ौदा ग्रामीण बैंक, विद्युत, परिवहन, स्वास्थ्य, भेल, राजकीय मुद्रणालय, आशा, बैंक, आंगनवाड़ी, डाक विभाग, चिकित्सा, वाणिज्य, ऑटो रिक्शा, रेहड़ी-पटरी एवं विभिन्न उद्योगों में कार्यरत कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान अखिलेश राय, बालेश्वर राय, नवीन सिन्हा, श्याम मोहन तिवारी, ज्योति प्रकाश, शशांक शेखर मिश्रा, गोविंद प्रसाद, निशांत शेखर, हिमांशु शेखर, कुमार वरल, रवि गोयल, वेद प्रकाश, पप्पू राम, हिमांशु रंजन, रवि शंकर सिंह, संतोष सिंह, शंकर दयाल श्रीवास्तव, तहसीलदार, सुबोध कुमार, विकास गर्ग, विजय, रामनाथ, अरविंद कुमार सिंह सहित सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल रहे। भारतीय मजदूर संघ ने प्रमुख मांगों में पुरानी पेंशन योजना लागू करने, बोनस की सीमा बढ़ाकर 18 हजार रुपये करने, बैंकिंग क्षेत्र में पांच दिवसीय कार्य सप्ताह लागू करने, ईएसआईसी की सीमा बढ़ाकर 42 हजार रुपये करने और ईपीएफ की सीमा बढ़ाकर 30 हजार रुपये करने की मांग की। इसके अलावा समान कार्य के लिए समान वेतन, ग्रेच्युटी की सीमा बढ़ाकर 40 लाख रुपये करने, संविदा कर्मियों के मासिक मानदेय में वृद्धि करने, एनएचएम में वेतन विसंगतियां दूर करने, न्यूनतम मासिक वेतन 30 हजार रुपये करने, योजना एवं अनुबंध श्रमिकों को नियमित करने तथा सामान्य भर्ती पर लगे प्रतिबंध को तत्काल हटाने की मांग भी उठाई गई। संघ ने कहा कि नौकरी की सुरक्षा के साथ गारंटीकृत रोजगार सुनिश्चित किया जाना जरूरी है, ताकि सेवा शर्तों में अनिश्चितता और असुरक्षा समाप्त हो सके। भारतीय मजदूर संघ केंद्र एवं राज्य सरकारों से इन लंबे समय से लंबित मांगों पर सकारात्मक कदम उठाने तथा श्रमिक हित एवं राष्ट्रीय विकास को ध्यान में रखते हुए जल्द निर्णय लेने का आग्रह करता है। विरोध प्रदर्शन की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष राजीव सिंह ने की। संचालन विभाग प्रमुख राकेश पांडेय ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन जिलामंत्री विकास केसरी ने दिया। समापन की घोषणा प्रदेश अध्यक्ष विशेश्वर राय ने की।

## सारंगनाथ मंदिर में 221 परिवारों ने किया सामूहिक रुद्राभिषेक, सनातन संस्कृति के साथ सामाजिक एकता का संदेश

वेलकम इंडिया/संतोष कुमार सिंह

**वाराणसी।** सारंगनाथ रुद्राभिषेक समिति काशी द्वारा सारनाथ स्थित प्राचीन सारंगनाथ मंदिर परिसर में भव्य सामूहिक रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया। इस धार्मिक आयोजन में 221 परिवारों ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता कर भगवान भोलेनाथ का विधि-विधान से रुद्राभिषेक किया। आयोजन ने धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक एकता, समरसता और पारिवारिक सहभागिता का अद्भुत संदेश प्रस्तुत किया।

सामूहिक रुद्राभिषेक के लिए मंदिर परिसर में विशेष व्यवस्था की गई थी। 100 वैदिक विद्वानों एवं आचार्यों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच सभी परिवारों का रुद्राभिषेक एवं पूजन विधि-विधान से संपन्न कराया गया। पूरे परिसर में वैदिक मंत्रों की गूंज और हर-हर महादेव के जयघोष से वातावरण भक्तिमय बना रहा। आयोजन के दौरान राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि, शांति एवं अखंडता की कामना को लेकर राष्ट्र रक्षा यज्ञ का भी आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक विद्वानों एवं आचार्यों द्वारा विशेष आहुतियां प्रदान की गईं। यज्ञ के माध्यम से देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले वीर जवानों, राष्ट्र की एकता एवं जनकल्याण के लिए प्रार्थना की गई। समिति की ओर से समाज और सनातन संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले विभिन्न विशिष्ट व्यक्तित्वों को 'सनातन गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में आनंद प्रभा सिंह, कथा वाचिका नंदिनी सरस्वती पटेल, गीतकार कन्हैया दुबे केडी, पार्षद इंद्रेश सिंह, अभय पांडेय, अजीत सिंह बग्गा, संजय गुप्ता, अरुण त्रिपाठी, अशोक यादव सहित अन्य विशिष्ट लोग शामिल रहे। इन सभी को स्वतंत्रता सेनानी तिलक राज कपूर के कर-कमलों से सम्मानित किया गया। समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि सामूहिक रुद्राभिषेक केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज को एक सूत्र में जोड़ने का माध्यम है। अलग-अलग परिवारों और वर्गों के लोगों का एक साथ बैठकर भगवान शिव की आराधना करना सामाजिक समरसता और सनातन संस्कृति की जीवंत परंपरा का प्रतीक है। आयोजन के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ने का भी प्रयास किया गया।

समिति के अध्यक्ष डॉ. संजय सिंह गौतम ने कहा कि भगवान सारंगनाथ की कृपा से आयोजित यह सामूहिक रुद्राभिषेक श्रद्धा, सेवा और सामाजिक एकता का पर्व बन गया है। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी यजमान परिवारों, आचार्यों, वैदिक विद्वानों, अतिथियों, कार्यकताओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. संजय सिंह गौतम, रेवती रमन शर्मा, देव कुमार, राजू, लोकपति सिंह, उमेश चंद्र राय, विवेक कपूर सहित समिति के अनेक पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यकताओं की निरंतर मेहनत, समर्पण और अथक प्रयास से पूरे आयोजन को व्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न कराया गया। आयोजन के अंत में समिति की ओर से सभी यजमान परिवारों, अतिथियों, वैदिक विद्वानों, आचार्यों, समाजसेवियों एवं कार्यक्रम में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी लोगों का आभार व्यक्त किया गया। समिति ने कहा कि भविष्य में भी सनातन संस्कृति, सामाजिक समरसता और राष्ट्रहित से जुड़े ऐसे आयोजनों को निरंतर आगे बढ़ाया जाएगा।

## भीमनगर तालाब सौंदर्यीकरण कार्य का जिलाधिकारी ने किया स्थलीय निरीक्षण

वेलकम इंडिया संवाददाता

**बुलंदशहर।** नगर पालिका गुलावठी द्वारा अमृत 2.0 योजना के अंतर्गत मोहल्ला भीमनगर में कराए जा रहे तालाब के सौंदर्यीकरण कार्य का जिलाधिकारी कुमार हर्ष ने स्थलीय निरीक्षण कर जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने मौके पर मौजूद कर्मचारियों से कार्य प्रारंभ होने की तिथि, कुल लागत और निर्धारित अवधि के संबंध में जानकारी ली। तालाब का निर्माण कार्य अधूरा मिलने पर संबंधित ठेकेदार ने बताया कि लेवलिंग, तालाब के चारों ओर रैंप निर्माण सहित अन्य अवशेष कार्य जल्द पूरा कर लिया जाएगा। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी लंबित कार्य शीघ्र पूर्ण कराए जाएं और तालाब परिसर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने तालाब तक आने वाले मार्ग पर इंटरलॉकिंग कराने के भी निर्देश दिए। साथ ही थर्ड पार्टी निरीक्षण में सामने आई खामियों को दूर कर निर्माण कार्य को निर्धारित मानकों एवं गुणवत्ता के साथ पूरा कराने को कहा। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन नीतीश कुमार सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

# डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का 'आगाज-2026' से स्वागत

## अनुशासन, नवाचार और राष्ट्र निर्माण का संदेश लेकर शुरू हुआ विद्यार्थियों का नया शैक्षणिक सफर

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** डॉ. के. एन. मोदी विश्वविद्यालय, मोदीनगर में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत एवं उन्हें विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था और वातावरण से परिचित कराने के उद्देश्य से सोमवार को 'आगाज-2026' अभिमुखीकरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों में खासा उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में कमलेश कुमार (आईएएस) कार्यकारी निदेशक , आयुध निमार्णी , मुरादनगर, गाजियाबाद ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नए शैक्षणिक जीवन की शुरूआत पर बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थी अनुशासन, समर्पण, नवाचार और जिम्मेदारी की भावना के साथ अपने लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल उपाधि प्राप्त करना नहीं, बल्कि ज्ञान और प्रतिभा का उपयोग समाज एवं राष्ट्र के विकास में करना भी है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. (डॉ.) डी. के. मोदी ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं।

कुलपति प्रो. (डॉ.) पी. एन. ऋषिकेशा ने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक एवं व्यावसायिक अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर डॉ. के. एन. मोदी फाउंडेशन के वाइस प्रेसिडेंट राजीव सक्सेना तथा डॉ. संजय गुप्ता (ट्रस्टी) की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके अलावा डॉ. के. एन. मोदी फाउंडेशन के कुलसचिव यू. एन. मिश्रा, अधिष्ठाता, फाउंडेशन से संबद्ध संस्थानों के निदेशक, विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना, नियम एवं विनियम, शिक्षण प्रक्रिया, प्रवेश व्यवस्था, सह-पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर गतिविधियों, विद्यार्थी सहायता सेवाओं, अनुशासन तथा व्यक्तित्व विकास से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। मुख्य अतिथि ने कहा कि विश्वविद्यालयी शिक्षा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, व्यावसायिक दक्षता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है। विद्यार्थियों को शोध, सांस्कृतिक गतिविधियों, खेल, नवाचार, उद्यमिता तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया। 'आगाज-2026' के दौरान नवप्रवेशित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के नेतृत्व, शिक्षकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से संवाद करने का अवसर भी मिला। विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में अपने नए शैक्षणिक जीवन की शुरूआत को लेकर उत्साह और प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समापन सकारात्मक एवं प्रेरणादायी वातावरण में हुआ। विश्वविद्यालय परिवार ने विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का स्वागत करते हुए उनके उज्ज्वल एवं सफल भविष्य की कामना की। विश्वविद्यालय ने ज्ञानवान, कुशल, जिम्मेदार, नवाचारी और सामाजिक रूप से जागरूक विद्यार्थियों के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

# रुद्रांश परिवार का वार्षिक समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** रुद्रांश परिवार का वार्षिक समारोह हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विधायक मंजू शिवाच एवं एसडीएम कोमल पवार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने रुद्रांश परिवार के सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए सभी सदस्यों का उत्साहवर्धन किया।श्रीमती सुचेता सिंह( ब्लॉक प्रमुख ) ने भी उपस्थित होकर सदस्यों को सम्मानित किया। यूवीकेन ग्रुप एवं स्वाभिमान ग्रुप के सदस्यों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यकारिणी अध्यक्ष श्रीमती ममता आर्य ने संस्था की पूरे वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। वहीं संरक्षक उषा चौधरी द्वारा अतिथियों, पदाधिकारियों एवं सदस्यों का सम्मान कर पुरस्कार वितरित किए गए। समारोह में रुद्रांश एक जरिया चैरिटेबल संस्था के 2025-2006 के पदाधिकारियों ने 2026-2027 के पदाधिकारियों को उनके पद के अनुसार बैचेज पहनाकर कार्यभार सौंपा। 2026-2027 संरक्षक उषा चौधरी अध्यक्ष सुमिता शर्मा के उपाध्यक्ष रेणु शर्मा सचिव वंदना गर्ग उपसचिव एकता चौधरी कोषाध्यक्ष अंजू गुप्ता उपकोषाध्यक्ष पिंकी अग्रवाल कार्यकारिणी अध्यक्ष ममता आर्य उप कार्यकारिणी अध्यक्ष रजनी मित्तल मीडिया प्रभारी पूजा शर्मा सभी को उनका कार्यभार सौंपा। वंदना गर्ग के विशेष सहयोग से रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिसमें वंदना गर्ग, डा.रुपा त्यागी, रेणु शर्मा अंजू गुप्ता, पूजा शर्मा , एकता चौधरी, पिंकी अग्रवाल, शिवानी, पारुल जी एवं उनकी बेटी आराध्या ने सहभागिता की। सुमन बजाज जी एवं उषा जी द्वारा प्रस्तुत नाट्य ने भी सभी का मन मोह लिया। दिवाकर को कॉल कर चौधरी और नितिन गर्ग दोनों भाइयों ने बाहरी कार्य संभाला। कार्यक्रम के सफल आयोजन में रुद्रांश परिवार के सभी सदस्यों एवं कार्यकताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

# किडजी मोदीनगर में धूमधाम से मनाया गया 'उत्सव-ए-तीज'

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** किडजी मोदीनगर में महिलाओं के लिए विशेष रूप से 'उत्सव-ए-तीज' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए तीज के पारंपरिक रंग, संस्कृति और उमंग का आनंद लिया। कार्यक्रम में मेहंदी, स्वादिष्ट व्यंजनों के स्टॉल, मनोरंजक गतिविधियों एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। रंग-बिरंगे परिधानों में सजी महिलाओं ने संगीत और नृत्य का आनंद लेते हुए उत्सव को यादगार बनाया।

किडजी मोदीनगर के मैनेजिंग डायरेक्टर अनमोल बंसल ने कहा, 'उत्सव-ए-तीज का उद्देश्य महिलाओं को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने के साथ-साथ मनोरंजन और आपसी मेल-जोल का एक खूबसूरत मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम की शानदार सफलता ने इसे संस्कृति, उत्साह और महिला सहभागिता से भरपूर एक यादगार आयोजन बना दिया।

# महिला पंजाबी संगठन एवं लायंस क्लब मोदीनगर उड़ान इंटरनेशनल द्वारा भव्य तीज समारोह आयोजित

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** महिला पंजाबी संगठन एवं लायंस क्लब मोदीनगर उड़ान इंटरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में भव्य तीज समारोह का आयोजन हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में तीज की पारंपरिक संस्कृति, रंग-बिरंगे परिधानों, संगीत, नृत्य और मनोरंजक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया।समारोह में लगभग 350 लोगों ने सहभागिता की और पूरे कार्यक्रम में उत्सव एवं उमंग का माहौल बना रहा।

समारोह में विभिन्न स्टॉल्स भी लगाए गए, जिनमें विभिन्न प्रकार के उत्पाद एवं आकर्षक वस्तुएं उपलब्ध रहीं। उपस्थित लोगों ने स्टॉल्स पर खरीदारी का आनंद लिया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक डॉ. मंजू शिवाच जी सहित साध्वी प्रियंका शुक्ला, सरिता विष्णोई जी, गरिमा त्यागी, रेनू मित्तल , डॉ. पुलकित त्यागी, इंदु नेहरा ( वी एच पी ) डॉ प्रीति शर्मा, डॉ. सताक्षी गर्ग, निशा जैसवाल सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने तीज के पारंपरिक गीतों, संगीत और नृत्य का आनंद लिया। विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियों एवं मनोरंजक गतिविधियों ने समारोह को और भी खास बना दिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को जीवंत रखते हुए महिलाओं को एक साथ उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करना रहा। महिला पंजाबी संगठन की अध्यक्ष डॉ. शालिनी नैय्यर ने अपनी पूरी टीम के साथ कार्यक्रम की सफलता में योगदान देने वाले सभी सदस्यों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने मोदीनगर चेयरमैन विनोद वैशाली जी और उनकी धर्मपत्नी सुधा वैशाली जी को उनके निरंतर सहयोग, मार्गदर्शन एवं बेहतरीन प्रबंधन के लिए विशेष धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि उनके सहयोग से कार्यक्रम को भव्य एवं सफल स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहायता मिली। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला पंजाबी संगठन एवं लायंस क्लब मोदीनगर उड़ान इंटरनेशनल की पूरी टीम ने सक्रिय भूमिका निभाई। टीम के सदस्यों की मेहनत, समर्पण और आपसी सहयोग से समारोह को यादगार बनाया गया।

# गौरी तीज महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** स्पाइस गार्डन में गौरी तीज महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। इस मौके पर तीज महोत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुनेहा जैन ने कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा अर्चना के साथ किया । मुख्य अतिथि श्रीमती सुनेहा जैन ने कहा कि तीज का पावन त्यौहार हमारी संस्कृति और सभ्यता को दशार्ता है । पावन त्यौहार को प्रेम भाव के साथ मनाने से हमारी आने वाली पीढ़ी को भी भारतीय संस्कृति और सभ्यता को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। हमें अपने तीज त्यौहारो को आपसी सौहार्द प्रेमभाव के साथ मनाने चाहिए। कार्यक्रम में ओजस्वी, सोनिया, प्रियंका, दीया गुप्ता,गिन्नी, गुरबानी, मीनाक्षी, रचना, ज्योति जैन, पारुल, सुमिता, प्रीति,ऋचा गोयल, रुचि धवन शालिनी, भावना, निधि, प्रीति ,नीतू सिंघल, अमिता ,ऋचा वंदना, गौरी,गुंजन, रुचि, सारिका, पूजा नारंग, मेघा, रेनू गर्ग, निशा निधि,गरिमा आदि सदस्याएं उपस्थित रही।

# महिला वैश्य सभा द्वारा धूमधाम से मनाया गया तीज महोत्सव

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** महिला वैश्य सभा की ओर से स्पाइस गार्डन स्थित रेस्टोरेंट में तीज महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास व धूमधाम के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में वैश्य समाज की बहनों ने बड़ी संख्या में शिरकत की। कार्यक्रम का सफल संचालन संयोजिका रेनू मित्तल ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने मे संयोजिका रुची गुप्ता रेनू गुप्ता का भी विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में बतौर अतिथि डाङ्ग शालिनि, अनुराधा मित्तल, मोनिका माहेश्वरी एवं डॉ. पूनम गर्ग उपस्थित रहीं। आयोजन के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 40 वर्ष तक के आयु वर्ग में शुभी गोयल ने 'मिस तीज' का खिताब जीता, जबकि मुस्कान गर्ग रनरअप रहीं। वहीं 40 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में नीरु सिंघल 'मिस तीज' बनीं और मिथलेश मित्तल रनरअप रहीं। डांस प्रतियोगिता में स्वाति गुप्ता प्रथम, मंजू शर्मा द्वितीय व खुशबू सिंघल तृतीय स्थान पर रहीं। संस्था द्वारा आयोजित राखी बनाओ प्रतियोगिता में डॉ. श्रेया गुप्ता ने प्रथम, रिचा गुप्ता ने द्वितीय व मिथलेश मित्तल ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अलावा 'बेस्ट ड्रेस्ड' का विशेष पुरस्कार नेहा गुप्ता को दिया गया। प्रतियोगिताओं के बाद सभी सदस्यों ने तंबोला गेम का आनंद लिया। अंत में स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ कार्यक्रम का रंगारंग समापन हुआ।

# संपूर्ण समाधान दिवस में 23 शिकायतें पहुंचीं, तीन का मौके पर निस्तारण

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** तहसील मोदीनगर में सोमवार को आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 23 शिकायतें अधिकारियों के समक्ष पहुंचीं। अधिकारियों ने शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। इस दौरान तीन शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। तीनों शिकायतें समाज कल्याण विभाग से संबंधित थीं।संपूर्ण समाधान दिवस में एक दिव्यांग व्यक्ति ने अपनी समस्याएं अधिकारियों के समक्ष रखते हुए दिव्यांगजनों की पेंशन बढ़ाकर पांच हजार रुपये प्रतिमाह किए जाने की मांग की। इसके साथ ही दिव्यांगजनों के लिए स्वरोजगार की व्यवस्था कराने और मेडिकल सुविधा उपलब्ध कराने की मांग भी रखी गई। अधिकारियों ने शिकायतकताओं की समस्याएं सुनकर उनके निस्तारण के लिए संबंधित विभागों को निर्देशित किया। समाधान दिवस के दौरान एसडीएमको कोमल पवार और तहसीलदार सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। अधिकारियों ने कहा कि प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण

# डॉ के एन मोदी कॉलेज में नशा मुक्ति अभियान कि छात्रों को दिलाई गई शपथ

अनिल वशिष्ठ

**मोदीनगर(वेलकम इंडिया)।** नशा एक दीमक की तरह है जो इंसान के तन, मन और समाज को अंदर से खोखला कर देता है-डॉ एस सी अग्रवाल आज डॉ के एन मोदी साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज मोदीनगर गाजियाबाद में प्रार्थना स्थल पर छात्रों को नशा मुक्ति अभियान के विषय में विस्तार से बताया गया । नशे से दूर रहने के लिए शपथ भी दिलाई गई ।डॉक्टर सतीश चंद्र अग्रवाल ने बताया कि नशा मुक्ति अभियान 17 अगस्त 21 अगस्त तक विभिन्न पोस्टरों ,स्लोगन बैनर के माध्यम से छात्रों और छात्रों के माध्यम से समाज को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया जाएगा। इस अभियान का उद्देश्य समाज में नशे के विरुद्ध आमजन को जागरूक करना है छात्रों को स्पष्ट रूप से समझाया गया कि नशे से दूर रहकर ही स्वस्थ जीवन यापन किया जा सकता है ।नशा एक दीमक की तरह है जो इंसान के तन मन और समाज को अंदर से खोखला कर देता है इसे जड़ से मिटाना और जागरूक करना हम सब की जिम्मेदारी है नशे की लत पूरा हँसता खेलता परिवार आर्थिक और मानसिक संकट में आ जाता है। समाज को सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए नशा मुक्त समाज के निर्माण का बहुत जरूरी है। नशा ने केवल मानसिक संतुलन को बिगाड़ता है बल्कि अपराध और हिंसा को भी बढ़ावा देता है। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक व शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

# रक्षाबंधन पर बहनों का सफर होगा आसान, रोडवेज बढ़ाएगा 250 फेरे

वेलकम इंडिया संवाददाता

साहिबाबाद। रक्षाबंधन के त्योहार पर बहनों को भाइयों तक पहुंचने में बसों की कमी के कारण परेशानी न हो, इसके लिए परिवहन निगम ने तैयारियां तेज कर दी हैं। 28 अगस्त को रक्षाबंधन के मद्देनजर निगम 26 से 31 अगस्त तक रोडवेज बसों के करीब 250 अतिरिक्त फेरे संचालित करेगा। इस दौरान सभी प्रमुख मार्गों पर बसों के चक्कर बढ़ाए जाएंगे, ताकि त्योहार के दौरान यात्रियों की बढ़ती भीड़ को संभाला जा सके। हर वर्ष रक्षाबंधन पर बड़ी संख्या में महिलाएं रोडवेज बसों से यात्रा करती हैं। भीड़ अधिक होने के कारण कई बार महिलाओं को बसों में खड़े होकर सफर करना पड़ता है और सीट नहीं मिलने पर उन्हें निजी बसों का सहारा लेना पड़ता है। परिवहन निगम इस बार पहले से अतिरिक्त बस संचालन की योजना तैयार कर इन परेशानियों को कम करने का दावा कर रहा है। रक्षाबंधन के दौरान साहिबाबाद, कौशांबी, लोनी, हापुड़, खुर्जा, बुलंदशहर और सिकंदराबाद डिपो से संचालित बसों के चक्कर बढ़ाए जाएंगे। इसके लिए सभी डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधकों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं। अधिकारियों को प्रमुख मार्गों पर यात्रियों की संख्या के अनुसार बसों का संचालन सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है। डिपोवार बसों की संख्या में साहिबाबाद और कौशांबी में 45-45, लोनी में 35, जबकि हापुड़, खुर्जा, बुलंदशहर और सिकंदराबाद में 30-30 बसें शामिल हैं।

# आईटीएस मोहन नगर में नए विद्यार्थियों के स्वागत की तैयारी, 19 अगस्त को 'प्रारंभ-2026, एमबीए-एमसीए के लिए फ्यूजन-2026 का आयोजन

वेलकम इंडिया संवाददाता

**गाजियाबाद।** आईटीएस मोहन नगर में नए शैक्षणिक सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के स्वागत और उनके कॉलेज जीवन की सकारात्मक शुरूआत के लिए 'प्रारंभ-2026' एवं 'फ्यूजन-2026' अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से नवप्रवेशित विद्यार्थियों को संस्थान की शैक्षणिक व्यवस्था, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, उद्योग जगत की जरूरतों और रोजगार के अवसरों से परिचित कराया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के नए वातावरण में सहज बनाने के साथ उनके व्यक्तित्व विकास और भविष्य की दिशा तय करने में मार्गदर्शन दिया जाएगा। आईटीएस मोहन नगर के स्नातक परिसर में बीबीए के 31वें बैच और बीसीए के 30वें बैच के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए 'प्रारंभ-2026' अभिमुखीकरण कार्यक्रम 19 अगस्त, बुधवार को सुबह 10:30 बजे आयोजित होगा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिष्ठित अतिथियों की मौजूदगी में उद्घाटन समारोह के साथ किया जाएगा। 'प्रारंभ-2026' कार्यक्रम में आईटीएस-द एजुकेशन ग्रुप के उपाध्यक्ष अर्पित चड्ढा, आईपीएस एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. आर.पी. सिंह, योट्टा डेटा साइंसेज प्राइवेट लिमिटेड के अध्यक्ष एवं समूह मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजेश गर्ग तथा अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक वक्तृत्व प्रशिक्षक ऑथर शेरी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। विशेषज्ञ विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ व्यावहारिक ज्ञान, नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल और बदलते रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी देंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ अपने व्यक्तित्व और व्यावसायिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करना है। इसी क्रम में आईटीएस मोहन नगर में एमबीए और एमसीए के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए 'फ्यूजन-2026' अभिमुखीकरण कार्यक्रम 17 से 22 अगस्त तक आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्घाटन सत्र 18 अगस्त को होगा। उद्घाटन सत्र में आईटीएस-द एजुकेशन ग्रुप के उपाध्यक्ष अर्पित चड्ढा, वैश्विक आतंकवाद निरोधक परिषद एवं कार्यकारी समिति के सदस्य रियर एडमिरल डॉ. एस. कुलश्रेष्ठ, एनआईआईटी विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल के सदस्य अरविंद ठाकुर तथा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भोपाल के निदेशक प्रो. आशुतोष सिंह विद्यार्थियों को संबोधित करेंगे। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ विद्यार्थियों को प्रबंधन शिक्षा, तकनीकी क्षेत्र में बदलते अवसरों, नेतृत्व क्षमता और उद्योग जगत की अपेक्षाओं से अवगत कराएंगे। विद्यार्थियों को यह भी बताया जाएगा कि उच्च शिक्षा के दौरान उपलब्ध अवसरों का बेहतर उपयोग करते हुए वे अपने करियर को किस दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। दोनों अभिमुखीकरण कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के नए माहौल से सहज रूप से जोड़ना है।

# राशन डीलरों की बल्ले-बल्ले: अब 125 रुपये प्रति कुंतल मिलेगा लाभांश, अन्नपूर्णा भवनों में 39 वस्तुएं बेच सकेंगे

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** उचित दर विक्रेताओं की आय बढ़ाने के लिए प्रदेश सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम का सजीव प्रसारण कविनगर के जानकी भवन, रामलीला मैदान में किया गया। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री सुनील कुमार शर्मा, मुरादनगर विधायक अजीत पाल त्यागी समेत जिले के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राशन डीलरों को अब 90 रुपये के स्थान पर 125 रुपये प्रति कुंतल लाभांश मिलेगा। केंद्र सरकार से भी अतिरिक्त 25 रुपये बढ़ाने का आग्रह किया गया है। अन्नपूर्णा भवनों में राशन डीलर 39 प्रकार की अनुमन्य वस्तुओं की बिक्री कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकेंगे।

कैबिनेट मंत्री सुनील कुमार शर्मा ने कहा कि राशन वितरण नियमित रूप से हो और कोई भी पात्र लाभार्थी योजना से वंचित न रहे। विधायक अजीत पाल त्यागी ने इसे डबल इंजन सरकार द्वारा कमाई के नए अवसर खोलने वाला कदम बताया।

कार्यक्रम में पांच अंत्योदय और सात गृहस्थी कार्ड लाभार्थियों को वितरित किए गए। जिले में 556 राशन डीलरों के माध्यम से करीब 20 लाख लाभार्थियों को प्रतिमाह खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है। 11 अन्नपूर्णा भवन संचालित हैं, जबकि 79 निमार्णाधीन हैं।

## लोनी बॉर्डर पुलिस की कार्रवाई, मोबाइल चोरी के आरोप में दो दबोचे

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** थाना लोनी बॉर्डर पुलिस ने चेकिंग के दौरान मोबाइल चोरी की घटना का खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से चोरी किया गया एक मोबाइल फोन बरामद किया है।

पुलिस के अनुसार, 16 अगस्त को एक व्यक्ति ने थाने में तहरीर देकर बताया था कि उसके कमरे से मोबाइल फोन चोरी हो गया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने धारा 305(ए) बीएनएस के तहत मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू की। 17 अगस्त को थाना लोनी बॉर्डर पुलिस टीम लालबाग कीकर जंगल के पास चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान पुलिस ने संदिग्ध परिस्थितियों में दो युवकों को पकड़ लिया। पूछताछ में उनकी पहचान मेहरदास और सद्दाम के रूप में हुई। तलाशी लेने पर दोनों के कब्जे से चोरी किया गया एक मोबाइल फोन बरामद हुआ। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। बरामद मोबाइल के संबंध में दर्ज मुकदमे में आवश्यक धाराएं बढ़ाते हुए आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस का कहना है कि क्षेत्र में चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए चेकिंग अभियान लगातार जारी रहेगा।

## सम्पूर्ण समाधान दिवस में 119 शिकायतें, 11 का मौके पर निस्तारण

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार मांदड़ के निर्देशन में सोमवार को जनपद की तीनों तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित किया गया। अधिकारियों ने फरियादियों की शिकायतें सुनते हुए संबंधित विभागों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश दिए। सदर तहसील में अपर जिलाधिकारी (नगर) विकास कश्यप की अध्यक्षता में आयोजित समाधान दिवस में 23 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें से चार का मौके पर निस्तारण किया गया। इस दौरान एसडीएम सदर अजीत कुमार सिंह सहित राजस्व, पुलिस, नगर पालिका समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। लोनी तहसील में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट/एसडीएम दीपक सिंघनवाल की अध्यक्षता में 35 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें चार शिकायतों का मौके पर समाधान किया गया। मोदीनगर तहसील में एसडीएम कोमल पंवार की अध्यक्षता में समाधान दिवस आयोजित हुआ, जहां सबसे अधिक 61 शिकायतें सामने आईं। इनमें तीन शिकायतों का तत्काल निस्तारण किया गया।

इस प्रकार तीनों तहसीलों में कुल 119 शिकायतें प्राप्त हुईं, जबकि 11 शिकायतों का मौके पर समाधान कराया गया। अधिकारियों ने शेष शिकायतों का भी प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

## शराब के ठेके के बाहर 'दबंग' की दबंगई, तीन युवकों को पीटा; एक को नाले में फेंका

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** क्रॉसिंग रिपब्लिक थाना क्षेत्र के बहरामपुर इलाके में शराब के ठेके के बाहर मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में एक युवक तीन युवकों के साथ जमकर मारपीट करता दिखाई दे रहा है। आरोपी ने युवकों को लात-घूंसों से पीटा और इसी दौरान एक युवक को धक्का देकर नाले में गिरा दिया।

वीडियो में मौके पर मौजूद कुछ लोग घटना को देखते नजर आ रहे हैं, जबकि मारपीट करने वाला युवक लगातार युवकों पर हमला करता दिखाई दे रहा है। घटना का वीडियो सामने आने के बाद इलाके में चर्चा का माहौल है। पुलिस वायरल वीडियो के आधार पर मामले की जांच कर रही है और मारपीट में शामिल लोगों की पहचान का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद तथ्यों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

## किसानों को मिला वार्ता का भरोसा, आंदोलन स्थगित; बोले- मांगें नहीं मानीं तो फिर होगा बड़ा आंदोलन

**कपिल चौहान**

**ग्रेटर नोएडा(वेलकम इंडिया)।** पुलिस कमिश्नर के ठोस आश्वासन के बाद किसान संघर्ष मोर्चा ने अपना आंदोलन फिलहाल स्थगित कर दिया है। किसानों की गिरफ्तारी के बाद जेल से ही मोर्चा के प्रतिनिधिमंडल ने सेक्टर-108 स्थित पुलिस कमिश्नर कार्यालय में वार्ता की। वार्ता में तीनों प्राधिकरणों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों (CEO) और जिलाधिकारी (DM) की मौजूदगी में किसानों के लंबित मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा कराने का आश्वासन दिया गया।

पुलिस कमिश्नर ने 10 प्रतिशत विकसित प्लॉट, नए भूमि अधिग्रहण कानून का लाभ, आबादी के लंबित प्रकरणों समेत किसानों की अन्य मांगों के समाधान के लिए प्राधिकरण स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त करने और प्रत्येक मामले में समय-सीमा तय कर कार्रवाई कराने की बात कही।

किसान संघर्ष मोर्चा के प्रमुख नेता डॉ. रुपेश वर्मा ने कहा कि वार्ता सकारात्मक और ठोस रही। किसानों की मांग थी कि तीनों प्राधिकरणों के CEO और जिलाधिकारी को एक साथ बैठाकर सभी मुद्दों पर निर्णायक वार्ता कराई जाए, जिस पर सहमति बनी है। सुखबीर खलीफा और सरन प्रधान ने कहा कि आंदोलन स्थगित हुआ है, समाप्त नहीं। वार्ता के परिणाम की समीक्षा के बाद मांगों का समाधान नहीं होने पर किसान फिर आंदोलन तेज करेंगे। प्रतिनिधिमंडल में बुधपाल यादव, प्रशांत भाटी, उदल आर्य, सचिन एडवोकेट समेत कई किसान नेता शामिल रहे।

## जनसुनवाई में शिकायतकताओं की समस्याएं सुन अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ने दिए समयबद्ध निस्तारण के निर्देश

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** अतिरिक्त पुलिस आयुक्त मुख्यालय एवं अपराध श्री केशव कुमार चौधरी ने अपने कार्यालय में शिकायत लेकर पहुंचे फरियादियों से वार्ता कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना। उन्होंने शिकायतकताओं की बातों को विस्तार से समझते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण, निष्पक्ष एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि फरियादियों की समस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए।

शिकायतों के निस्तारण की प्रक्रिया में पारदर्शिता बरतने के साथ ही पीड़ितों को उचित कार्रवाई की जानकारी भी उपलब्ध कराई जाए। इस दौरान संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक शिकायत पर प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई करने तथा निर्धारित समयसीमा में उसका निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। पुलिस अधिकारियों ने जनसमस्याओं के त्वरित समाधान के लिए प्रभावी कार्रवाई का भरोसा दिलाया।

## स्वतंत्रता दिवस पर विशाल कार रैली कार्यक्रम, देश भक्ति में रमा दिखा कौशाम्बी-वैशाली: वरुण शर्मा

**सुमित सोरेन**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** 80 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वार्ड 72 कौशांबी वैशाली क्षेत्र में जोरदार तिरंगा यात्रा कार रैली भाजपा कार्यकर्ता वरुण शर्मा के संयोजन में निकाली गई।

यात्रा का शुभारंभ सेंट्रल पार्क कौशांबी से हुआ जहां पर योगा ग्रुप के सदस्यों द्वारा राष्ट्रभक्ति के गीत का गायन और कौशाम्बी पार्क ग्रुप के द्वारा हनुमान चालीसा जी का पाठ किया गया।

इस शुभ अवसर पर कौशांबी निवासी और वायु सेवा से निवृत स्क्वायड और लीडर श्री देव राज शर्मा जी को उनकी देश सेवा के लिए यात्रा संयोजक वरुण शर्मा के नेतृत्व में कौशांबी वासियों द्वारा सम्मानित किया गया।

बलदेव राज शर्मा जी 1965,1971 और कारगिल युद्ध जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर अपनी सेवाएं देश को दे चुके हैं और अनेकों सेना पदकों से सम्मानित भी हैं। उसके बाद एक बड़ी संख्या पैदल यात्रा और गाड़ियों के माध्यम से कौशांबी और वैशाली के विभिन्न इलाकों से होकर गुजरी जिसका क्षेत्र वासियों ने पुष्प वर्षा कर बेहद उत्साह से स्वागत किया। वैशाली में एम पी पाठक के नेतृत्व में विभिन्न स्थानों पर कौशांबी से आए हुए यात्रियों का स्वागत और अभिनंदन पुष्प वर्षा से किया गया। दोनों क्षेत्रों के लोग बेहद हर्षित थे क्योंकि पहली बार एक साथ यह स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मना रहे थे।

यात्रा संयोजक वरुण शर्मा की इस अनूठी पहल को दोनों कॉलोनी के निवासियों ने बेहद सराहा और इसे वार्ड की एक जुटता बनाने की और एक बड़ा कदम बताया। उसके बाद यात्रा वापस कौशाम्बी सेंट्रल पार्क पर पहुंच कर कौशांबी निवासी प्रेम गोगिया का जन्मदिन मनाते हुए मंगल कामनाओ के साथ पूर्ण हुई। सभी क्षेत्रवासियों ने यात्रा संयोजक भाजपा कार्यकर्ता वरुण शर्मा और सहयोजक सुधीश अग्रवाल, अशोक परवाल, संजय भटनागर, सरोज वर्मा, डॉ आचार्य कृति शर्मा, शिवम मित्तल, अनिल आर्या, तुषार गुप्ता और साथियों के प्रयास को बेहद सराहा। समाज की और से दीपक अग्रवाल, शिवानी अग्रवाल, आलोक गौड़, प्रतिभा त्यागी साइना गुप्ता, अपूर्व गुप्ता, सहित सैकड़ो की संख्या में समाज के बंधु उपस्थित रहे।

## स्कूली वाहनों की सुरक्षा पर सख्ती, चालकों का चरित्र सत्यापन और स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य

**वेलकम इंडिया संवाददाता**

**गाजियाबाद।** स्कूली बच्चों के सुरक्षित आवागमन को लेकर परिवहन विभाग ने सख्त रुख अपनाया है। जिला कलेक्ट्रेट सभागार में विशेष जिला विद्यालय यान परिवहन सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें विद्यालयी वाहनों की सुरक्षा व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए गए। बैठक में विद्यालय प्रबंधन को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि विद्यार्थियों को स्कूल लाने-ले जाने वाले वाहनों के चालकों का चरित्र सत्यापन और स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य रूप से कराया जाए। केवल सत्यापित और स्वस्थ चालक ही विद्यालयी वाहन चलाएंगे।

सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) अमित राजन राय ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। विद्यालय प्रबंधन यह सुनिश्चित करें कि परिवहन व्यवस्था में किसी भी स्तर पर लापरवाही न हो और शासन की ओर से निर्धारित सुरक्षा मानकों का पूरी तरह पालन किया जाए। बैठक में छोटे बच्चों की सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया। अधिकारियों ने निर्देश दिए कि छोटे बच्चों के आवागमन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्रत्येक विद्यालयी वाहन में एक महिला या पुरुष सहायक की अनिवार्य मौजूदगी सुनिश्चित की जाए। सहायक की जिम्मेदारी बच्चों को सुरक्षित रूप से वाहन में बैठाने और उतारने के साथ यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा पर निगरानी रखना होगा। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि छोटे बच्चों को किसी भी स्थिति में बिना सहायक के विद्यालयी वाहन से आवागमन नहीं कराया जाएगा। विद्यालय प्रबंधन को इस व्यवस्था की नियमित निगरानी करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि बच्चों के स्कूल आने-जाने के दौरान किसी तरह की असुविधा या जोखिम की स्थिति उत्पन्न न हो।

बैठक में उत्तर प्रदेश मोटरयान नियमावली, 2019 के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया गया। इसके तहत प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों की सुरक्षा और विद्यालयी परिवहन व्यवस्था की निगरानी के लिए विद्यालय परिवहन सुरक्षा समिति का गठन अनिवार्य रूप से करने के निर्देश दिए गए। यह समिति विद्यालय में संचालित वाहनों की सुरक्षा व्यवस्था, चालकों की स्थिति और विद्यार्थियों के सुरक्षित परिवहन से जुड़ी व्यवस्थाओं की नियमित समीक्षा करेगी। समिति यह भी देखेगी कि विद्यालयी वाहन निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुरूप संचालित हो रहे हैं या नहीं और किसी स्तर पर नियमों की अनदेखी तो नहीं की जा रही है। परिवहन विभाग ने विद्यालय प्रबंधन को निर्देशित किया कि सभी स्कूली वाहनों में निर्धारित सुरक्षा मानकों का पूरी तरह अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। वाहनों के संचालन में किसी भी प्रकार की लापरवाही मिलने पर इसे गंभीरता से लिया जाएगा। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की सुरक्षा के साथ किसी भी स्तर पर समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। विद्यालय संचालकों से अपील की गई कि वे शासन द्वारा निर्धारित सभी सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन करें और बच्चों के सुरक्षित एवं सुगम आवागमन को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। परिवहन व्यवस्था में लगे चालकों और सहायकों की जिम्मेदारी भी तय की जाए, ताकि बच्चों की यात्रा सुरक्षित माहौल में हो सके।

# दो पक्षों की कहासुनी के बाद चली गोली, पुलिस ने संभाला मोर्चा

## प्रताप विहार में गोलीकांड से सनसनी, घायल अस्पताल में भर्ती

घायल आकाश

आरोपी

पीड़ित बादल छोटा भाई

**कपिल चौहान**

**गाजियाबाद(वेलकम इंडिया)।** विजयनगर थाना क्षेत्र के स्वदेशी चौक के पास रविवार देर रात बाइक सवार हमलावरों ने एक युवक को गोली मार दी। वारदात में युवक को दो गोलियां लगीं। गंभीर हालत में उसे संतोष अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से चिकित्सकों ने उसे दिल्ली के जीटीबी अस्पताल रेफर कर दिया। व्यस्त सड़क पर हुई गोलीबारी से इलाके में अफरातफरी मच गई।

घायल युवक की पहचान आकाश बिहारी के रूप में हुई है। बताया गया कि आकाश स्वदेशी चौक के पास चाउमीन की दुकान के बाहर स्कूटी पर खड़े होकर चाउमीन खा रहा था। इसी दौरान दो बाइकों पर सवार हमलावर पहुंचे और उस पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। एक गोली उसके कंधे और दूसरी पेट में लगी।

सूचना पर पहुंची विजयनगर पुलिस ने घायल को अस्पताल पहुंचाया और मामले की जांच शुरू की। घायल के भाई बादल के अनुसार, आकाश का पहले से एक युवक से विवाद चल रहा था। परिवार ने उसी युवक और उसके साथियों पर हमले का शक जताया है।

आरोप है कि घायल के इलाज के लिए आयुष्मान कार्ड लेने घर जा रहे उसके भाई के साथ भी पड़ोस में रहने वाले कुछ लोगों ने मारपीट की। आरोपियों के पास तमंचे और चाकू होने की बात कही गई है। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के आधार पर आरोपियों की पहचान कर जल्द गिरफ्तारी की जाएगी।